Tc.No. : GUJHIN00722

पेज: 4, मुल्य 1 रु.

दैनिक

क्रांति समय

संस्थापक / संपादक : सुरेश मौर्या

E-mail: krantisamay@gmail.com, www.krantisamay.com

वर्ष: 2 अंक: 197 , 23 दिसम्बर, शनिवार 2017, सूरत, हिन्दी दैनिक मो. 9879141480

4 ओ ब्लॉक आगम नवकार कॉम्पलेक्ष, सचीन रेल्वे स्टेशन के पास, सूरत-गुजरात

सार समाचार

आईआईआईटी दिल्ली शीर्ष 200 की सूची में शामिल

नई दिल्ली ((एजेंसी)। ब्रिक्स यूनिवर्सिटी की 2018 की रैंकिंग में इंद्रप्रस्थ इंस्टीटयूट आफ इनफार्मेशन टेक्नोलाजी (आईआईआईटी दिल्ली) को शीर्ष 200 संस्थानों की सूची में शामिल किया गया है। संस्थान को 181 से 190 के बीच का स्थान मिला है जो बड़ी उपलब्धि है। करीब 9 हजार संस्थानों की सूची में आईआईआईटी दिल्ली ने स्थापना के दस वर्ष के भीतर अंतर्राष्ट्रीय रैंकिंग में यह स्थान बनाया है। पहले दो सौ रैंक में राजधानी के तीन संस्थानों में आईआईटी दिल्ली (17वां स्थान), आईआईआईटी दिल्ली व दिल्ली विविद्यालय (41वां स्थान) को शामिल किया गया है। दिल्ली के उपराज्यपाल इस संस्थान के चांसलर हैं। उपराज्यपाल ने संस्थान के निदेशक, फैकल्टी व छात्रों को इस उपलब्धि के लिए बधाई दी है। आईआईआईटी दिल्ली को 181 से 190 के बीच का स्थान मिला है। इस संस्थान को बेहतर फैकल्टी व बेहतर शोध के कारण बेहतर स्थान मिला है।

मोदी सरकार के इशारे पर 2-जी के आरोपियों को बचाया गया : आप

नई दिल्ली (एजेंसी)। टू जी केस में पूर्व टेलीकॉम मंत्री ए राजा और कनीमोझी समेत अन्य आरोपियों को कोर्ट से क्लीन चिट मिलने पर आम आदमी पार्टी (आप) ने मोदी सरकार पर निशाना साधा है। उसका कहना है कि सीबीआई सीधे केंद्र सरकार के अधीन काम करती है और पीएम मोदी सरकार के इशारे पर ही 2-जी के आरोपियों को बचाया गया है।संवाददाता सम्मेलन कर आप के वरिष्ठ नेता व राष्ट्रीय प्रवक्ता आशुतोष ने कहा कि टू जी केस में जिस प्रकार से ए राजा और कनीमोझी समेत दूसरे आरोपियों को कोर्ट से क्लीन चिट मिली है उसमें सीबीआई की नाकामी साफ नजर आ रही है। सीबीआई के पूर्व प्रमुख एपी सिंह ने सामने आकर बयान दिया है कि इस केस में सीबीआई के पास ए राजा के खिलाफ पर्याप्त सबूत थे और सुप्रीम कोर्ट ने भी बड़े पुख्ता सबूतों के आधार पर ही टू-जी के अलॉटमेंट को रद्द किया था, तो फिर मोदी जी की ऐसी क्या मजबूरी रही कि उन्हें और उनकी सीबीआई को पिछले साढ़े तीन साल में कोई सुबूत नहीं मिला। आप नेता आशुतोष ने दावा किया कि पिछले दिनों प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और करु णानिधि के बीच मुलाकात हुई थी। देश जानना चाहता है कि कहीं मोदी जी की डीएमके नेताओं के साथ कोई डील तो नहीं हुई? कहीं ऐसा तो नहीं कि मोदी जी और उनकी सरकार ने सीबीआई के जरिए डीएमके नेताओं और बड़े-बड़े कारपोरेट घरानों को बचा लिया जो इस टू-जी केस में फंसे थे?

डॉलर का झांसा देकर कारोबारी से दो लाख ठगे

नई दिल्ली। थाना शकरपुर क्षेत्र में डॉलर का लालच देकर ठग ने एक कारोबारी से दो लाख रपए ठग लिए। ठगों के गिरोह ने रोहित तिवारी (29) को रुपयों के बदले कागज की रद्दी थमा दी। ठगों के जाने के बाद जब पीड़ित ने बैग खोलकर देखा तो उसे ठगी का पता चला। मामले की सूचना पुलिस को दी गई। शकरपुर थाना पुलिस मामला दर्ज कर घटनास्थल के आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगालकर आरोपियों को दबोचने की कोशिश कर रही है।पुलिस के अनुसार रोहित परिवार के साथ 2/441 सुभाषनगर में रहता है और कालीबाड़ी मार्ग में दुकान है। पिछले माह रोहित के पास 30-35 साल की महिला आई और उसे डॉलर का लालच दिया। महिला ने 20 डॉलर का नोट दिया तो रोहित ने नोट लेकर अपने पास रख लिया। बेचने पर उसे 1100 रपए मिले। इसी दौरान महिला से बातचीत होती रही। महिला के साथ एक युवक भी आता था। महिला ने पीड़ित से कहा कि उसकी मौसी को ऐसे करीब 1160 नोट उसके मालिक के घर से मिले थे। वह उन सबको बेचना चाहती है। रोहित ने दो लाख रपए में सभी 20 डॉलर के 1160 नोटों का सौदा महिला से कर दिया।

कारोबारी की हत्या व लूट का आरोपी दबोचा

नई दिल्ली। दिल्ली पुलिस अपराध की स्पेशल टास्क फोर्स की टीम ने अशोक विहार थाना इलाके में एक कारोबारी की हत्या कर लूटपाट करने वाले एक 50 हजार के इनामी बदमाश को दबोच लिया है। दबोचे गए आरोपी की पहचान रवि डेढ़ा (20) के रूप में हुई। आरोपी पर पहले से ही सीमापुरी थाने में कई आपराधिक मामले दर्ज हैं। संयुक्त आयुक्त आलोक कुमार ने बताया कि बीते 22 अगस्त को अशोक विहार इलाके में चार बाइक सवार चार बदमाशों ने संजीव नामक कारोबारी को लूटने के बाद गोली मारकर हत्या कर दी थी।

बोर्ड ऑफ गवनर्स की आपातकालीन बैठक बुलाएं, डीन ने भेजा बीओजी अध्यक्ष को मेल

एनएसआईटी का प्रशासनिक कामकाज ठप

नई दिल्ली (एजेंसी)। उच्च न्यायालय ने एनएसआईटी निदेशक की नियुक्ति 11 दिसम्बर को की रद्दइसके बाद निदेशक ने कामकाज किया बंददिल्ली सरकार अबतक नहीं ले पाई एनएसआईटी निदेशक को लेकर निर्णय उच्च न्यायालय के आदेश से दिल्ली सरकार सांसत में नेताजी सुभाष प्रौद्योगिकी संस्थान (एनएसआईटी) के चार विभागों के डीन ने बोर्ड ऑफ गवनर्स (बीओजी) के अध्यक्ष राहुल चौधरी को ई-मेल के जरिये पत्र भेजकर संस्थान के निदेशक की लगातार अनुपस्थिति को देखते हुए वैकल्पिक व्यवस्था करने के लिए बीओजी की आपातकाल बैठक बुलाने का आग्रह किया है। चारों डीन ने बीओजी अध्यक्ष राहुल चौधरी को भेजे पत्र में कहा है कि संस्थान में निदेशक 12 दिसम्बर से लगातार कामकाज नहीं कर रहे हैं। निदेशक जेपी सैनी उच्च न्यायालय के 11 दिसम्बर के कड़े आदेश के बाद किसी भी फाइल पर हस्ताक्षर नहीं कर रहे हैं। बृहस्पतिवार को निदेशक अपने कार्यालय में थोड़ी देर के लिए पहुंचे लेकिन कोई काम नहीं किया। अब एनएसआईटी का प्रशासनिक काम काज पूरी तरह ठप हो चुका है। अंडरग्रेजुएट विभाग व पोस्ट ग्रेजुएट विभाग की कक्षा एक जनवरी से शुरू होगी जिसके लिए गेस्ट शिक्षकों के चयन की प्रक्रिया बंद है। उधर 11 दिसम्बर को दिल्ली उच्च न्यायालय द्वारा नियुक्ति रद्द होने के बावजूद एनएसआईटी के निदेशक को पद से अबतक नहीं हटाया गया है।

कोर्ट ने संस्थान के निदेशक प्रो. जेपी सैनी की नियुक्ति प्रक्रिया में एआईसीटीई और डीओपीटी के नियमों की अनदेखी के चलते उनकी नियुक्ति को रद्द करके बोर्ड ऑफ गवर्नर्स को निदेशक की नियुक्ति की प्रक्रिया को नए सिरे से शुरू करने को कहा था। उच्च न्यायालय ने प्रो. सचिन माहेश्वरी की याचिका पर सुनवाई के बाद यह फैसला दे दिया है। कोर्ट ने अपने आदेश में कहा कि एनएसआईटी निदेशक पद के लिए 30 नवम्बर 2016 को जारी किए गए विज्ञापन में उल्लिखित अर्हताएं अवैध हैं और ऐसे में निदेशक पद पर प्रो जेपी सैनी की नियुक्ति रद्द की जाती है। एआईसीटीई के नियमों के मुताबिक संस्थान का निदेशक बनने के लिए 13 साल अध्यापन या शोध का अनुभव जिसमें कि मात्र तीन साल बतौर प्रोफेसर का अनुभव होना जरूरी है। जबकि संस्थान में तत्कालीन कार्यवाहक निदेशक और दिल्ली प्राविधिक विविद्यालय के कुलपति प्रो. योगेश सिंह ने बिना बोर्ड ऑफ गवर्नर्स की अनुमति किए निदेशक पद की योग्यता के दस वर्ष बतौर प्रोफेसर अनुभव की मांग वाला विज्ञापन जारी करवा दिया। अब एनएसआईटी के पूर्व निदेशक योगेश सिंह पर आरोप लग रहा है कि उन्होंने सैनी को निदेशक बनाने के लिए फर्जीवाड़े किए और विज्ञापन में उनकी अनुकूलता के अनुरूप अर्हतायें जारी कराई। दिल्ली उच्च न्यायालय ने 35 पृष्ठ के आदेश में निदेशक के मामले पर दिल्ली सरकार द्वारा रोक लगाने की मांग को भी खारिज कर दिया है। इससे पूरे मामले में दिल्ली सरकार भी कटघरे में है।

पार्षदों के साथ मारपीट के मामले में पुलिस नहीं कर रही सहयोग : आप

नई दिल्ली ((एजेंसी)। आप ने आरोप लगाया है कि दक्षिणी दिल्ली नगर निगम की बैठक में पार्टी की महिला पार्षद कृष्णावती के साथ भाजपा के पार्षदों ने मारपीट की है। इस मामले में संबंधित थाने में शिकायत दर्ज करायी गई है लेकिन पुलिस इस मामले में सहयोग नहीं कर रही है। पार्टी दफ्तर में संवाददाता सम्मेलन कर आप के राष्ट्रीय प्रवक्ता दिलीप पांडेय ने कहा है कि निगम बिल्डिंग डिपार्टमेंट में व्याप्त भ्रष्टाचार को उठाने पर मेयर कमलजीत सहरावत ने पार्टी के 12 पार्षदों को 15 दिन के लिए निलंबित कर दिया। उन्होंने कहा कि सदन में भाजपा से आप पार्षद जवाब मांगते हैं लेकिन बजाए जवाब देने के बीजेपी के पार्षद सदन में आप पार्षदों से मारपीट करते हैं। उन्होंने कहा है कि बिल्डिंग डिपार्टमेंट समेत निगम के दूसरे विभागों में किए गए बीजेपी के हजारों करोड़ रपए के घटाले पर कांग्रेस पूरी तरह से मौन है, दरअसल हककीत यह है कि बीजेपी के सारे भ्रष्टाचार में कांग्रेस बराबर की भागीदार है। पत्रकार वार्ता में मौजूद पीड़ित ''आप' पार्षद कृष्णावती ने कहा कि ''हम निगम में भाजपा नेताओं का भ्रष्टाचार उजागर करते हैं तो वह हमें धमकी देते हैं।

हमने सदन में जब बीजेपी के भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाज उठाई तो भाजपा पार्षदों ने महिला पार्षदों को इशारा किया जिसके बाद बीजेपी की महिला पार्षदों ने मुझे घेर लिया और मुझसे मारपीट की, उसी मारपीट में मेरा हाथ भी तोड़ दिया गया। हमने इसकी शिकायत पुलिस से की है, लेकिन पुलिस न तो मुकदमा दर्ज कर रही है और न ही इस मामले को गंभीरता से ले रही है। इस मामले को लेकर वे कोर्ट का दरवाजा खटखटाएंगे।

संविधान के सपनों को सच करने वाली गुणवत्ता हो शिक्षा में : सिसोदिया

आईआईटी दिल्ली में 700 से ज्यादा प्राइवेट स्कूलों के प्रधानाचार्यों को शिक्षा मंत्री ने किया संबोधित

नई दिल्ली (एजेंसी)। शिक्षा मंत्री मनीष सिसोदिया ने कहा कि शिक्षा में ऐसी गुणवत्ता होनी चाहिए जिससे संविधान के सपनों को सच किया जा सके। शिक्षा मंत्री से लेकर शिक्षा विभाग तक, अभिभावक, बच्चों, प्रिंसिपल व शिक्षक तक सबके दिमाग में ये स्पष्ट होना चाहिए कि शिक्षा का उद्देश्य क्या है।

संविधान में लिखी गई बातों को सच करने वाली शिक्षा ही गुणवत्ता वाली शिक्षा है। एक्सीलेंस इन स्कूल एजुकेशन विषय पर बृहस्पतिवार को इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (आईआईटी) में आयोजित एक कांफ्रेंस में दिल्ली के उप-मुख्यमंत्री और शिक्षा मंत्री मनीष सिसोदिया ने ये बात कही। इस कार्यक्रम में देशभर के 700 से ज्यादा प्राइवेट स्कूलों के प्रधानाचार्यरे और अनेक शिक्षाविदों ने हिस्सा लिया।शिक्षा मंत्री ने कहा कि मानव जाति के लिए इससे बढ़िया सपना और कुछ नहीं हो सकता जो हमने अपनी संविधान की संकल्पना में लिखा है। मैं इसे अपने साथ रखता हूं व इससे मुझे प्रेरणा मिलती है। सिसोदिया ने कहा कि संविधान की ये बातें जेल में नहीं लिखी जातीं, अवार्ड कार्यक्रमों में भी इसे नहीं लिखा जाता, इन्हें हमारे बच्चों की किताबों में लिखा जाता है। हमें इस उद्देश्य को समझना होगा। हम बच्चों को फिजिक्स पढ़ाएं, कैमिस्ट्री पढ़ाएं।

12 फरवरी को होने वाले साहित्योत्सव में प्रदान किए जाएंगे पुरस्कार

मेघ समेत 24 लेखकों को मिलेगा साहित्य अकादमी पुरस्कार

नई दिल्ली ((एजेंसी)। हिन्दी के वयोवृद्ध आलोचक एवं सुप्रसिद्ध विद्वान डॉ. रमेश कुंतल मेघ, राजस्थानी के नीरज दईया, संस्कृत के निरंजन मिश्र और मराठी के श्रीकांत देशमुख समेत 24 लेखकों को इस वर्ष के साहित्य अकादमी पुरस्कार देने की बृहस्पतिवार को यहां घोषणा की गई। साहित्य अकादमी के अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी की अध्यक्षता में कार्यकारिणी की बैठक में इन पुरस्कारों को मंजूरी दी गयी। अकादमी के सचिव के. श्रीनिवास राव ने पुरस्कारों की घोषणा करते हुए पत्रकारों को बताया कि इस बार सात उपन्यास, पांच कविता संग्रह, पांच समालोचना, एक नाटक और एक निबंध के लिए ये पुरस्कार दिए जा रहे हैं। पुरस्कार में हर लेखक को एक-एक लाख रपए, एक प्रतीक चिन्ह एवं एक प्रशस्ति पत्र शामिल है। उन्होंने बताया कि ये पुरस्कार 12 फरवरी को राजधानी में होने वाले साहित्योत्सव में प्रदान किए जाएंगे। पुरस्कार एक जनवरी 2011 से 31 दिसंबर 2015 के दौरान प्रकाशित पुस्तकों के लिए दिए गए। राव ने बताया कि डॉ. मेघ को यह पुरस्कार उनकी आलोचनात्मक पुस्तक विश्व मिथक्सरित्सागर के लिए दिया गया। हिंदी के लिए चयन समिति में डॉ. विजय बहादुर सिंह, नासिर शर्मा और डॉ सदानंद गुप्ता थे। कविता के लिए उदय नारायण सिंह नचिकेता (मैथिली), श्रीकांत देशमुख (मराठी), भुजुन्गटुडू (संथाली), स्व इन्कलाब (तमिल) और देवप्रिया (तेलुगु) को यह पुरस्कार मिला। उपन्यास के लिए पुरस्कृत लेखकों में जयंत माधव बार (असमिया), अफ्सार आमेद (बंगला), रीता बार (बोडो), ममंग दाई (अंग्रेजी), के पी राम नुन्नी (मलयालम), निरंजन मिश्र और नछतर (पंजाबी) शामिल है। डोगरी के शिव मेहता, कश्मीरी के अवतार कृष्ण रहबर, कोंकणी के गजानन जोग, ओडिया की गायत्री सराफ और उर्दू के बेग एहसास को कहानी के लिए यह पुरस्कार मिला। गुजरती के लेखक उर्मिघण श्याम देसाई, हिन्दी के लेखक डॉ, रमेश कुंतल मेघ, द कन्नड़ के टीपी अशोक, नेपाली के वीणा हांग्खिम, राजस्थानी के नीरज दईया को आलोचना और मणिपुरी के राजेन तोइजाम्बा को नाटक तथा सिन्धी के लेखक जगदीश लछानी को निबंध के लिए यह पुरस्कार दिये गए। इसके साथ ही 24 भाषाओं में पुस्तकों के अनुवाद के लिए भी अनुवाद पुरस्कार की भी घोषणा की गयी। इसमें पच्चास हजार रपए प्रशस्ति पत्र स्मृति चिन्ह भी शामिल है। ये पुरस्कार जुलाई में दिए जाएंगे।

हवाई अड्डे पर यात्री से मिले चार कारतूस

नई दिल्ली। आईजीआई एयरपोर्ट के टर्मिनल 3 से डायल के सुरक्षा कर्मियों ने चेक इन एरिया में एक यात्री के जांच के दौरान .32 बोर के चार कारतूस बरामद किए है। बंगलूरू जाने के लिए एक यात्री सुबह 6 बजे आईजीआई एयरपोर्ट के टर्मिनल 3 पर पहुंचा। चेक इन एरिया में जांच के दौरान डायल के सुरक्षाकर्मी को यात्री के सामान में कुछ संदिग्ध दिखाई दिया।

मैक्स अस्पताल में पहले दिन 218 मरीजों ने कराया उपचार

मैक्स मामला : पीड़ित परिवार ने की सीबीआई जांच की मांग

नई दिल्ली (एजेंसी)। शालीमार बाग स्थित मैक्स अस्पताल को लाइसेंस रद्द होने पर अपीलीय प्राधिकरण से राहत मिलने के खिलाफ दूसरे दिन भी मृतक बच्चों के परिजनों का धरना जारी रहा। बृहस्पतिवार को परिजनों ने सीबीआई जांच की मांग की है।

प्राधिकरण से मंजूरी लेने के बाद बुधवार को मैक्स अस्पताल की ओपीडी शुरू हुई। प्रबंधन के अनुसार बुधवार को ओपीडी में 218 मरीजों का उपचार किया गया है। हालांकि प्राधिकरण के लिखित आदेश पर प्रबंधन अभी भी खामोश है। लेकिन सूत्रों से पता चला है कि प्राधिकरण ने ये राहत 9 जनवरी को होने वाली अगली सुनवाई तक दी है। शालीमार बाग स्थित मैक्स अस्पताल द्वारा जुड़वां बच्चों को मृत घोषित किए जाने के मामले में अस्पताल का लाइसेंस रद्द करने संबंधी दिल्ली सरकार के आदेश पर अस्पताल को अपीलीय प्राधिकरण से स्थगन मिलने पर बच्चों के दादा ने मामले की सीबीआई से जांच कराने की मांग की है। बृहस्पतिवार को एक संवाददाता सम्मेलन में बच्चे के 48 वर्षीय दादा कैलाश ने आरोप लगाया कि परिवार को स्थगन आदेश के बारे में जानकारी नहीं दी गई। इस बहुचर्चित मामले में जीवित पाए गए दूसरे बच्चे की बाद में पीतमपुरा के एक नर्सिंग होम में मौत हुई थी। हालांकि उसकी जुड़वां बहन मृत पैदा हुई थी।

कैलाश ने कहा कि हमने शालीमार बाग स्थित मैक्स अस्पताल के बाहर मौन रहकर प्रदर्शन किया, लेकिन पुलिस ने हमें वहां से हटा दिया। दिल्ली सरकार का फैसला अन्य अस्पतालों के लिए चेतावनी की तरह हो सकता था। उन्होंने कहा कि अब लाइसेंस रद्द किए जाने के फैसले पर स्थगन लगा दिया गया है। हम न्याय के लिए भागदौड़ कर रहे हैं। हम न्याय और पूरे मामले की सीबीआई जांच की मांग करते हैं ताकि चीजें स्पष्ट हो सकें। बच्चे के दादा ने कहा कि उन लोगों ने मामले को आगे बढ़ाने के लिए एक वकील की सेवा ली है।

उन्होंने दावा किया कि मामले की जांच की स्थिति रिपोर्ट के लिए उन्होंने आज (बृहस्पतिवार को) रोहिणी की एक अदालत में एक याचिका दायर की है। वित्तीय आयुक्त की अदालत ने स्वास्य सेवा महानिदेशालय द्वारा अस्पताल का लाइसेंस रद्द किए जाने संबंधी आदेश पर नौ जनवरी तक के लिए स्थगन लगा दिया। मामले की अगली सुनवाई उसी दिन होगी।

विपक्ष की यह कार्रवाई राजनीतिक सुर्खियों में रहने के लिए : शिखा

विपक्ष के हंगामे के बाद चढ़ा राजनीतिक

नई दिल्ली (एजेंसी)। दक्षिणी दिल्ली नगर निगम में नेता सदन शिखा राय ने आप के पार्षदों की कार्रवाई पर अफसोस जताते हुए कहा कि सुर्खियों में रहने के लिए उन्होंने यह सब किया है। वह इसकी शिकायत मुख्यमंत्री अरविन्द केजरीवाल से मिलकर करेंगी। इसके लिए उन्होंने मुख्यमंत्री से समय मांगा है। उसके बाद उप-राज्यपाल से भी मिलेंगी। नेता सदन ने प्रेस कॉफ्रेंस में कहा कि अब सदन की बैठक को सुचारू रूप से चलाने के लिए महिला मार्शलों की तैनाती जरूरी हो गयी है। उन्होंने उस डॉक्टरों को भी चेतावनी देते हुए कहा कि रिपोर्ट में फैक्कर की बात गलत निकली तो वह डॉक्टर के विरुद्ध भी कार्रवाई करेंगी। उन्होंने कहा कि आप के पार्षदों की नियती बन गयी है वह बैठक को चलने ही नहीं देते। इसीलिए उन्होंने इस बार तय किया था कि वह बैठक पूरी करेंगे, चाहे विपक्ष हंगामा करता रहे। नेता सदन ने कहा कि मेयर ने नेता विपक्ष रमेश मटियाला को तीन बार आवाज देकर अपनी बात रखने को कहा, लेकिन वह हंगामा करने में मस्त रहे। इस हंगामे के लिए उन्होंने आप के विधायकों पर भी आरोप लगाया कि वह केवल पार्षदों को हंगामे के लिए उकसाने आते हैं। बुधवार

मेयर के घर रात्रि में पहुंची पुलिस दिन में पुलिस ने मेयर ऑफिस पहुंचकर रिसीव करायी शिकायत मेडिकल जांच में नहीं निकली चोट : दिल्ली पुलिस पुलिस ने मेयर से मांगे सीसीटीवी फुटेज समेत अन्य सबूत

की बैठक में तो चार विधायक मौजूद थे। उन्होंने मेयर के घर रात्रि में 3 बजे पुलिस पहुंचने पर कड़ी आपत्ति जतायी।

भाजपा पार्षदों ने विपक्षी पार्षदों के विरुद्ध की शिकायत :

भाजपा पार्षद किरन चोपड़ा, माया सिंह बिष्ट, आरती सिंह एवं मनोज महलावत ने पुलिस उपायुक्त के यहां शिकायत की है कि निगम की बैठक के दौरान विपक्ष के पार्षदों ने उनके साथ बदसलूकी की और हाथापायी भी की। सत्तापक्ष के पार्षदों ने आरोपियों में पीएस जून, प्रकाश जाखड़, विधायक जरनैल सिंह, दिनेश, नरेंद्र, रमेश मटियाला (नेता विपक्ष), प्रेम चावला एवं किशनावती समेत अन्य को शामिल किया है। दक्षिणी दिल्ली नगर निगम की बैठक में बुधवार को हुए हंगामे के बाद बृहस्पतिवार को अचानक दिल्ली का राजनीतिक पारा चढ़ गया है। विपक्ष यानी आम आदमी पार्टी के पार्षदों ने देर शाम सत्ता पक्ष (भाजपा) के पार्षदों के विरुद्ध पुलिस में शिकायत

सदन में महिला मार्शल होंगी तैनात

दर्ज करा दी और अस्पताल जाकर मेडिकल जांच करायी। शिकायत में अनुसूचित जाति की एक महिला पार्षद ने सत्तापक्ष के पार्षदों पर जातिसूचक शब्दों का इस्तेमाल करने का भी आरोप लगाया है। विपक्ष की शिकायत पर रात्रि में करीब 3 बजे पुलिस की एक टीम मेयर कमलजीत सहरावत के घर पहुंच गयी। खास बात यह है कि सत्तापक्ष के आरोपी पार्षदों ने भी पुलिस में शिकायत देकर प्राथमिकी दर्ज करने का अनुरोध किया है। नगर निगम की बैठक के बाद शुरू हुए राजनीतिक घटनाक्रम को लेकर बृहस्पतिवार को पूरे दिन राजनीतिक उठा-पटक चलती रही। भाजपा पार्षद इस बात से बेहद गुस्से में हैं कि आखिर रात्रि के 3 बजे मेयर के घर पुलिस क्यों पहुंची, जबकि यह मामला सदन की बैठक के दौरान का था। इसकी पुष्टि मेयर कमलजीत सहरावत ने भी की है। उनका कहना है कि रात्रि (बुधवार) में जब पुलिस उनके घर पहुंची, तो उन्होंने यह कहलवा दिया कि वह सुबह कार्यालय में आकर मिले। यह सुनकर पुलिस की टीम बैरंग लौट गयी। मेयर के मुताबिक पुलिस ने तर्क दिया था कि वह विपक्ष के पार्षदों की शिकायत को रिसीव कराना चाहती है, जबकि शिकायत को रिसीव करने की जिम्मेदारी मेयर कार्यालय की है। मेयर का कहना है कि विपक्ष के पार्षद जिस बैठक में धमकाने का आरोप लगा रहे हैं, वह बैठक आमतौर पर निगम की हर बैठक से पहले बुलायी जाती है। इस तरह की बैठक में सभी दलों के नेता प्रमुख होते हैं और मेयर बैठक शांतिपूर्ण चलाने देने के लिए सहयोग का आग्रह करता है। यही बात उस बैठक में भी हुई थी। मेयर का कहना है कि उनके पार्षदों ने महिला कर्मचारियों को बचा लिया, नहीं तो आप के यह पार्षद उनके साथ बदसलूकी की सारी सीमाएं पार करने पर आमादा थे। उल्लेखनीय है कि महिला कर्मचारियों के साथ बदसलूकी के आरोप में ही मेयर ने कई पार्षदों को 15 दिन के लिए सदन की बैठक से निलंबित कर दिया था।

मेयर के ऑफिपहुंची पुलिस, मांगा रेकार्ड : दोपहर बाद थाना कमला मार्केट पुलिस की एक टीम मेयर के ऑफिस पहुंची। दो पुलिस अधिकारियों में जांच अधिकारी भी शामिल था। उन्होंने अपना नाम नरसिंह बताया। पुलिस ने मेयर से बैठक के दौरान के सीसीटीवी फुटेज एवं अन्य दस्तावेज मांगे हैं। नगर निगम कल शुक्रवार तक सभी दस्तावेज पुलिस को मुहैया करा देगा।पुलिस ने माना कि राजनीतिक दबाव था : मेयर ऑफिस में तैनात प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि जिस समय मेयर ने पुलिस अधिकारियों से सवाल किया कि आखिर ऐसी क्या वजह रही कि उन्हें रात्रि के 3 बजे उनके घर आना पड़ा। मेयर के सवाल पर महिला पुलिस अधिकारी ने सॉरी बोलते हुए कहा कि मेडम उनके ऊपर अधिकारियों का दवाब था। महिला पुलिस अधिकारी ने यह भी कहा कि राजनीतिक मामलों में इस तरह का दवाब कुछ ज्यादा ही रहता है।

मेडिकल जांच में नही निकली चोट : पुलिस जांच अधिकारी का कहना है कि उसने डॉक्टर की रिपोर्ट देख ली है, उसमें किसी तरह के फैक्कर का कोई जिक्र नहीं है। प्लास्टर चढ़वाना एक अलग बात है, लेकिन जांच में किसी चोट का कोई जिक्र नहीं है। उन्हें लोकनायक जय प्रकाश नारायण अस्पताल से जांच के दौरान फोन आया था, तभी वह मौके पर पहुंच गये थे।

सुख लगभग हर बार कठोर श्रम की प्रतिक्रिया ही होता है -डेविड ग्रेसन

2 जी स्पेक्ट्रम धोटाला

टू जी स्पेक्ट्रम आवंटन मामले में सीबीआई की विशेष अदालत द्वारा सारे आरोपितों को बरी किए जाने के बाद राजनीतिक तापमान का बढ़ना स्वाभाविक है। जब यह मामला सामने आया था तब भी देश में राजनीतिक बवण्डर खड़ा हुआ था। कैग ने 2010 में अपनी रिपोर्ट में 2 जी स्पेक्ट्म आवंटन मामले में भारी धांधली की पुष्टि करते कहा था कि इससे खजाने को 1 लाख 76 हजार करोड़ का नुकसान हुआ था। आजादी बाद इतनी बड़ी राशि के भ्रष्टाचार का आरोप इससे पहले सामने नहीं आया था। मामला सर्वोच्च न्यायालय तक गया और सीबीआई को जांच सौंपा गया। एक मामला प्रवर्तन निदेशालय ने भी दर्ज किया। जाहिर है, यह फैसला सीबीआई और प्रवर्तन निदेशालय दोनों के लिए धक्का है। ध्यान रखने की बात है कि न्यायालय ने यह नहीं कहा है कि इस मामले में धांधली नहीं हुई। उसने केवल यह कहा है कि सीबीआई और प्रवर्तन निदेशालय आरोपितों के खिलाफ पुख्ता सबूत पेश करने में बुरी तरह विफल रही है। फैसले का जितना अंश सामने आया है, उससे पता चलता है कि न्यायालय ने जांच एजेंसियों विशेषकर सीबीआई के खिलाफ कड़ी टिप्पणियां की हैं। उसने कहा है कि सीबीआई क्या कर रही थी, यह समझ से परे है। सीबीआई और प्रवर्तन निदेशालय के पास उच्च न्यायालय जाने का विकल्प खुला हुआ है। किंतु वर्तमान फैसले की राजनीतिक प्रतिध्वनि हम सुन रहे हैं। कांग्रेस कह रही है कि उनकी सरकार पर इतना बड़ा आरोप लगाया गया, जिसे न्यायालय ने गलत साबित कर दिया। इसका अर्थ है, इस मामले में कोई भ्रष्टाचार हुआ ही नहीं। यह नहीं भूलना चाहिए कि फरवरी 2012 में ही सर्वोच्च न्यायालय ने संप्रग सरकार के कार्यकाल में आवंटित 2 जी स्पेक्ट्रम के 122 लाइसेंस रद्द कर दिए थे। अगर कोई गड़बड़ी हुई ही नहीं तो न्यायालय ने ऐसा क्यों किया? हालांकि न्यायालय ने भी इसमें भ्रष्टाचार आदि पर कोई बात नहीं की। केवल यह कहा कि इसमें नियमों-प्रक्रियाओं को ताक पर रखा गया। अंतिम तिथि में परिवर्तन कर दिया गया जिससे कई कंपनियां बाहर हो गई। सच यह है कि इसमें ''पहले आओ पहले पाओ' की नीति को भी कायम नहीं रखा गया। 2001 के मूल्य पर 2008 में स्पेक्ट्रम देने का कोई कारण नहीं था। जाहिर है यदि नियमों-प्रक्रियाओं का पालन नहीं हुआ तो इसका कुछ कारण होगा। क्या कुछ कंपनियों और लोगों को लाभ पहुंचाने के लिए ऐसा किया गया? इसका जवाब बाकी है।

प्रद्युम्न की हत्या

निस्संदेह, यह ऐतिहासिक निर्णय है। रेयान इंटरनेशनल स्कूल के दूसरी कक्षा के छात्र प्रद्युम्न की हत्या के मामले में आरोपित छात्र पर अब जिला और सत्र न्यायालय में बालिग की तरह मुकदमा चलेगा। किशोर न्याय बोर्ड ने सीबीआई की याचिका पर सुनवाई करते हुए जैसे ही यह फैसला दिया इसके पक्ष और विपक्ष में बहस शुरू हो गई। एक पक्ष मानता है कि यह सही फैसला है, क्योंकि जिस तरह की हैवानियत पकड़े गए 11 वीं के छात्र ने किया था, वह एक वयस्क अपराध के सदृश्य ही था। यह तर्क भी दिया जा सकता है कि अगर नाबालिगों को जघन्य अपराध में भी नाबालिग मानकर व्यवहार किया जाएगा तो इससे अपराध बढ़ेगा। अपराध करते समय उनके मन में यह भाव होगा कि उनके साथ नाबालिग समझकर व्यवहार होगा और साधारण सजा को बाल सुधार गृह में आराम से काट लिया जाएगा। निर्भया मामले में यही हुआ। एक अपराधी, जिस पर सबसे ज्यादा हैवानियत का आरोप था उसे नाबालिग मानकर मुकदमा चला और उसे कठोर सजा नहीं दी गई। इसका फायदा बड़े अपराधी गैंग भी उठाते हैं। वे नाबालिग से अपराध करवाते हैं। उनको यह समझा देते हैं कि पकड़े गए तब भी तुमको बड़ी सजा नहीं हो सकती। हालांकि इसका दूसरा पक्ष भी है। वह यह कि अगर नाबालिग ने नासमझी में कोई अपराध कर दिया तो उसके साथ एक अभ्यस्त अपराधी की तरह व्यवहार नहीं किया जाना चाहिए। उसे सुधरने का मौका मिलना चाहिए ताकि उसका भविष्य गैर अपराधी का हो सके। तो इस पर बहस चलती रहेगी। 11 वीं के जिस छात्र ने प्रद्युम्न की हत्या की वह जघन्य अपराध की श्रेणी में आएगा। सीबीआई की जांच में यह बात सामने आई कि आरोपित छात्र ने स्कूल में होने वाली परीक्षा और अभिभावक शिक्षक बैठक (पीटीएम) को टलवाने के लिए यह हत्या की थी। इतने के लिए एक अभ्यस्त अपराधी की तरह किसी का गला काटने वाले के अपराध को एक नाबालिग का अपराध मानकर व्यवहार नहीं होना चाहिए। इस संदर्भ में मानक यह होना चाहिए कि एक नाबालिग आरोपित को बालिग मानकर मुकदमा चलाया जाए या नहीं, यह उसके द्वारा किए गए अपराध की मंशा और गंभीरता पर निर्भर होना चाहिए। तात्पर्य यह कि इस फैसले को हर मामले के लिए नजीर की तरह इस्तेमाल नहीं किया जाना चाहिए। यानी जैसा अपराध वैसा व्यवहार। अब यह अदालत को ही तय करना है कि नाबालिग का कौन सा जुर्म बालिगों के अपराध की श्रेणी में आता है।

सत्संग

आध्यात्मिकता

स्वीकृति आपको हर चीज से मुक्त कर देगी। यही रास्ता है। स्वीकृति सहनशीलता से कहीं ज्यादा बेहतर है। लेकिन अगर आप जागरूक नहीं हैं, अगर स्वीकार करना आपके लिए संभव नहीं है। और आप हर छोटी-छोटी चीज के लिए चिड़चिड़ा जाते हैं तो आपको कम-से-कम सहनशीलता तो विकसित कर ही लेनी चाहिए। आपको पता ही है, जीसस ने कहा था कि अगर कोई आपको एक गाल पर थप्पड़ मारे, तो दूसरा गाल भी उसके आगे कर दो। यह बात उन्होंने केवल अपने बारह शिष्यों से कही थी, आम जनता से नहीं। जनता को कई बार पलटकर मारना भी पड़ जाता है। जो लोग वाकई में आध्यात्मिक होना चाहते हैं, उनसे उन्होंने कहा कि अगर वे पलटकर मारेंगे, तो वह उनकी आध्यात्मिकता का अंत होगा। गौतम ने तो इससे भी बढ़ कर शिक्षा दी थी। उस दौर में उत्तर भारत में पिंडारियों का बड़ा आतंक था। डाका डालना ही उनका पेशा था। पैदल या बैलगाड़ी से यात्रा करने वालों के लिए ये पिंडारी एक बड़ा खतरा माने जाते थे। आमतौर पर वे हिन्दू साधु-संन्यासियों को छोड़ देते थे, लेकिन बौद्ध भिक्षुकों को वे नहीं बख्शते थे, क्योंकि वे उनके लिए नये थे। गौतम ने कहा ''मान लो, आपको जंगल में पकड़ लिया जाए। अगर डाकू दुधारी तलवार से आपके हाथ भी काट दें, तो भी आपके मन में जरा भी प्रतिरोध नहीं आना चाहिए।' इस तरह उन्होंने भी सहनशीलता की बात की। अगर आप वास्तव में यह देख पाते हैं कि अपने कर्मों की वजह से ही आपको जीवन में कष्ट मिल रहे हैं तो ऐसे शख्स को जो आपके हाथ काट रहा है, बुरा-भला कह कर अपने कर्म को और बढ़ाने का क्या मतलब है? आज आप जो भी हैं, जैसे भी हैं, उसके लिए आप स्वयं और आपके कर्म जिम्मेदार हैं। ऐसे में अगर कोई चीज सुविधाजनक नहीं है, तो उसके बारे में शिकायत करने का क्या लाभ! कुछ चीजों के लिए हो सकता है कि आप यह कहने के लिए तैयार हों कि ये आपके कर्म हैं, लेकिन बाकी चीजों का क्या! अगर स्वीकार करने की क्षमता है तो कुछ भी संभव है। यही सबसे अच्छा रास्ता है। लेकिन जब लोग इतने सजग नहीं होते कि हर पल को स्वीकार कर सकें, तो विकल्प देने पड़ते हैं। स्वीकार कर लेने की क्षमता का एक बेहद कमजोर विकल्प है सहनशीलता, लेकिन स्वीकार करने की क्षमता नहीं है, तो कम से कम आपके पास सहनशीलता तो होनी ही चाहिए।

राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प

संयुक्त राष्ट्र समेत नियंतण्र असहमति के बावजूद अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प द्वारा येरूशलम को इस्त्रइली राजधानी की मान्यता दिये जाने की घटना ने पूरे विश्व को चिंतित किया है। तेल अवीव स्थित अमेरिकी दूतावास को यरुशलम स्थानांतरित करने के सख्त आदेश की फिलीस्तीन, जॉर्डन व अरब मुल्क समेत कई यूरोपीय-एशियाई राष्ट्रों द्वारा कड़ी निंदा की गई है। ब्रिटेन, चीन, फ्रांस, रूस व जर्मनी जैसे देशों ने इसे दुर्भाग्यपूर्ण बताकर मध्य-पूर्व में हिंसा भड़कने की आशंका जताया है तो वहीं अरब जगत इसके व्यापक असर को लेकर चिंतित है।

सतीश पेडणोकर

मजबूत नियंतण्र हस्तक्षेपों से ही उम्मीद बची है। प.एशिया के राष्ट्र इस विषय पर गंभीर जरूर दिखे हैं परन्तु यासिर अराफात के रहते समाधान का जैसा मार्ग प्रशस्त होता था, अब नहीं दिखता। यह भी सच है कि 2007 में गाजापट्टी में फिलीस्तीनियों की आजादी के संघर्ष में कट्टर व आक्रामक रणनीति को बढ़ावा देने वाले ''हमास' के कब्जा के बाद संघर्ष और भी हिंसक व अनियंत्रित हो चुका है। जहां तक भारत का सवाल है, इसका रुख स्वतंत्र व सुसंगत है। संयुक्त राष्ट्र समेत नियंतण्र असहमति के बावजूद अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प द्वारा येरूशलम को इस्त्रइली राजधानी की मान्यता दिये जाने की घटना ने पूरे विश्व को चिंतित किया है। तेल अवीव स्थित अमेरिकी दूतावास को यरुशलम स्थानांतरित करने के सख्त आदेश की फिलीस्तीन, जॉर्डन व अरब मुल्क समेत कई यूरोपीय-एशियाई राष्ट्रों द्वारा कड़ी निंदा की गई है। ब्रिटेन, चीन, फ्रांस, रूस व जर्मनी जैसे देशों ने इसे दुर्भाग्यपूर्ण बताकर मध्य-पूर्व में हिंसा भड़कने की आशंका जताया है तो वहीं अरब जगत इसके व्यापक असर को लेकर चिंतित है।

संयुक्त राष्ट्र के महासचिव एंटोनियो गुटेरस द्वारा ट्रम्प के फैसले को दो देशों के बीच शांति की संभावनाओं को नष्ट करने जैसा कदम बताया गया है। स्पष्ट है कि अमेरिकी राष्ट्रपति के इस फैसले का पूरी दुनिया में विरोध है क्योंकि तकरीबन सात दशकों से अमेरिकी विदेश नीति और इस्त्रइल-फिलीस्तीन के बीच जारी शांति बहाली की प्रक्रिया में इस विवादित पहल के नकारात्मक असर की संभावनाएं अधिक हैं। शुरुआती प्रतिक्रिया के तहत ईरान के राष्ट्रपति हसन रोहानी द्वारा इसे ''इस्लामी भावनाओं के उल्लंघन का प्रयास बताते हुए कतई बर्दाश्त नहीं करने की तल्ख टिप्पणी चिंताएं बढ़ाती हैं। तुर्की के राष्ट्रपति एदरेगान ने 13 दिसम्बर को इस्ताम्बुल में ''इस्लामिक सम्मेलन' बुलाया और इस्त्रइल से अपने कूटनीतिक संबंधों की समाप्ति की भी घोषणा कर दी है। इस्त्रइल जहां इस फैसले को ऐतिहासिक एवं साहसिक बता रहा है, फिलीस्तीन इसे शांति बहाली प्रक्रिया का सत्यानाश और मुस्लिम-ईसाइयों के खिलाफ जंग का एलान मानता है। यरुशलम की धार्मिक संवेदनशीलता से सब वाकिफ हैं। यहां से यहूदी, मुस्लिम और ईसाई तीन धर्मों की आस्था जुड़ी है। अल अक्सा मस्जिद विश्व भर के मुसलमानों के लिए जहां तीन सर्वाधिक पवित्र स्थलों में से एक है तो यहूदियों का सुलेमानी मंदिर भी यही स्थित है। इसी जगह पर ईसाइयों की वेस्टर्न वॉल भी है। दशकों से विवादित यह शहर फिलीस्तीन-इस्त्रइल के विवादों की मुख्य वजह बनी हुई है।

यरुशलम स्थित इस मस्जिद में फिलीस्तीनियों के आने-जाने पर कई तरह के अवरोध जैसे नमाजियों की तलाशी और प्रार्थना के दौरान लाउडस्पीकर की आवाज कम करना व अन्य तरह के प्रतिबंध आदि धार्मिक टकराव के हालिया कारण रहे हैं। एक दूसरे के अस्तित्व को मान्यता, सीमा-सुरक्षा, जल अधिकार, धार्मिक हस्तक्षेप, यरुशलम पर नियंत्रण, शरणार्थियों की समस्या आदि लम्बे समय से टकराव के मुद्दे बनी हैं। ऐतिहासिक पक्ष है कि 1914 के दौरान जब फिलीस्तीन तुर्की के ऑटोमन सामाज्य का हिस्सा था, लाखों की संख्या में अरब और हजारों की संख्या में यूरोप से आए यहूदी निवास करने लगे थे। इसी दौरान, ब्रिटेन के तत्कालीन विदेश मंत्री लॉर्ड बलफोर द्वारा फिलीस्तीन में यहूदियों को बसाने का वादा कर दिया गया था। वर्ष 1922 से ब्रिटिश हुकूमत के अधीन होने के बावजूद इस क्षेत्र को लेकर दोनों पक्षों के बीच गृह युद्ध जारी रहा। 1939 तक यूरोप से लाखों की संख्या में यहूदी फिलीस्तीन पहुंचे जिसका फिलीस्तीनियों द्वारा कड़ा विरोध होता रहा। 30 नवम्बर 1947 को संयुक्त राष्ट्र द्वारा यहूदियों व अरबों के विवाद सुलझाने की योजना को सहमति मिली, जिसके तहत 15 मई 1948 को अंग्रेजी शासन समाप्त होने के बाद इस्त्रइल व फिलीस्तीन को अलग-अलग पहचान मिली। धर्म के प्रमुख तीर्थस्थलों वाले शहर येरूशलम को फिलीस्तीन व इस्त्रइल दोनों ही से अलग पहचान दी गई। सन् 1948 में एक बार फिर दोनों राष्ट्रों में युद्ध हुआ, जिसमें यरुशलम के पश्चिमी हिस्सों पर इस्त्रइल का कब्जा हुआ। लाखों की संख्या में शरणार्थी पड़ोसी मुल्क में विस्थापित भी हुए। वर्ष 1967 के इस्त्रइल-फिलीस्तीन युद्ध में फिलीस्तीन को पूर्वी यरुशलम समेत अपने कुछ और हिस्से खोने पड़े। महत्त्वपूर्ण है कि संयुक्त राष्ट्र द्वारा इस्त्रइली कब्जे वाले इन क्षेत्रों को मान्यता प्राप्त नहीं है। सच है कि अधिकांश यूरोपीय देश इसके विरोध में दिखते हैं, लेकिन अमेरिकी नीतियां अस्पष्ट, एक तरफा व गैर-जिम्मेदाराना रही हैं। अमेरिका में वर्ष 1995 में अपने दूतावास को यरुशलम स्थानांतरित करने का कानून पारित किया गया था, परन्तु अब तक के राष्ट्रपति मुद्दे की संवेदनशीलता एवं संयुक्त राष्ट्र के मानकों के मद्देनजर मान्यता प्रदान करने से परहेज करते रहे। ट्रम्प द्वारा अपने चुनावी भाषणों में इस मुद्दे को खूब प्रचारित कर वादा किया गया कि सत्तासीन होने पर यरूशलम को राजधानी की मान्यता दी जाएगी। उनकी कैबिनेट में यहूदीवादी महत्त्वपूर्ण भूमिका में हैं भी। इसमें दो राय नहीं कि इस्त्रइल में बेंजामिन नेतन्याहु और अमेरिका में ट्रम्प के निर्वाचन के बाद इन मुद्दों में गर्माहट बढ़ी है। संयुक्त राष्ट्र द्वारा फिलीस्तीनी जमीं पर उपनिवेश को लेकर पारित प्रस्ताव का नेतन्याहु द्वारा ठुकराया जाना कड़े तेवर का संकेत था। डेविड एम फेडमैन जो इस्त्रइल में अमेरिकी दूत हैं, उन पर इस्त्रइल के कब्जे वाले इलाकों में अवैध उपनिवेशन के लिए चंदा जुटाने का आरोप है। ट्रम्प प्रशासन द्वारा फिलीस्तीनियों को मिल रही अनुदान की राशि भी बंद की जा चुकी है। इस स्थिति में मजबूत नियंतण्र हस्तक्षेपों से ही उम्मीद बची है। पश्चिम एशिया के राष्ट्र इस विषय पर गंभीर जरूर दिखे हैं परन्तु यासिर अराफात के आंदोलनरत रहते समाधान का जैसा मार्ग प्रास्त होता था, अब नहीं दिखता। यह भी सच है कि 2007 में गाजापट्टी में फिलीस्तीनियों की आजादी के संघर्ष में कट्टर व आक्रामक रणनीति को बढ़ावा देने वाले ''हमास' के कब्जा के बाद संघर्ष और भी हिंसक व अनियंत्रित हो चुका है। जहां तक भारत का सवाल है इसका रुख स्वतंत्र व सुसंगत है। यह पहला गैर अरब देश था, जिसने फिलीस्तीन को मान्यता देकर राजनीतिक संबंध स्थापित किया जबकि नब्बे के शुरुआती दिनों तक भारत इस्त्रइल को मान्यता देने से गुरेज करता रहा।

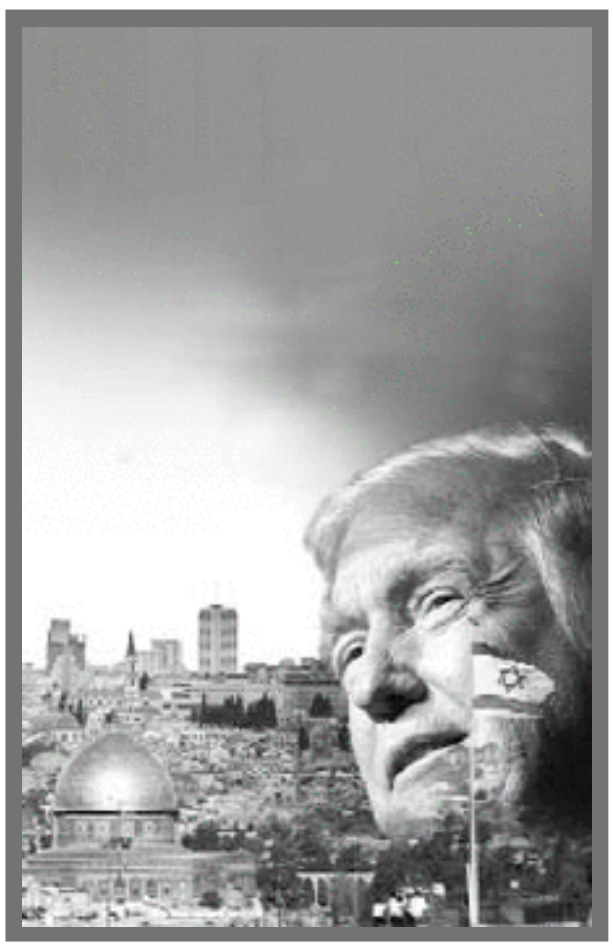

नरसिम्हा राव के कार्यकाल, 1992 में इस्त्रइल को मान्यता दी गई जिसके बाद से दोनों के बीच सैन्य संबंध मजबूत हुए। इसी वर्ष पहले भारतीय प्रधानमंत्री की इस्त्रइल यात्रा नियंतण्र घटना बनी। उनके फिलीस्तीन यात्रा की खबर भी चर्चा में है।

चलते चलते

महज़वपूर्ण फैसल

पांच साल के अपने एक्शन से भरपूर कार्यकाल में जस्टिस कुमार ने देश में पर्यावरण को दुरुस्त करने के वास्ते कई महत्त्वपूर्ण फैसले लिये, जिसकी देश भर में सराहना हुई। हां, कुछ हलकों में उनके कदम को इस संदर्भ में गलत माना गया कि ऐसी कोई संस्था इतने सख्त फैसले ले भी सकती है क्या? आशय यही कि पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने वाली महीन-से-महीन कारतूतों पर एनजीटी की न केवल नजर रहती थी।

पर्यावरण को लेकर अपने एक्शन, रिएक्शन और रिफाम्स को लेकर हमेशा चर्चा के केंद्र में रहे राष्ट्रीय हरित प्राधिकरण (एनजीटी) के अध्यक्ष जस्टिस स्वतंत्र कुमार सेवानिवृत्त हो गए। पांच साल के अपने एक्शन से भरपूर कार्यकाल में जस्टिस कुमार ने देश में पर्यावरण को दुरुस्त करने के वास्ते कई महत्तवपूर्ण फैसले लिये, जिसकी देश भर में सराहना हुई। हां, कुछ हलकों में उनके कदम को इस संदर्भ में गलत माना गया कि ऐसी कोई संस्था इतने सख्त फैसले ले भी सकती है क्या? आशय यही कि पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने वाली महीन-से-महीन कारतूतों पर एनजीटी की न केवल नजर रहती थी वरन कई नजीरी फैसले लेकर इस संस्था ने कई दुश्वारियों से देश को बचाने का भी काम बखूबी किया है। एक वक्त ऐसा भी था, जब चुनाव आयोग की हैसियत या उसकी कार्यपण्राली क्या है, शायद ही किसी को इसका इल्म था। लेकिन जब से टीएन शेषन ने चुनाव आयोग के प्रमुख का पद संभाला, हर किसी को इसकी ताकत का पता चल गया। ठीक वैसे ही पर्यावरण संरक्षण के लिए जस्टिस स्वतंत्र कुमार ने शानदार और साहस के साथ काम किया है। दरअसल, देश में पर्यावरण को शुद्ध, स्वच्छ और स्वास्थ्यपूर्ण बनाने की राह में कई रुकावटें दरपेश हैं। खासकर पर्यावरणीय माहौल को बनाने और यह कैसे बेहतर बने, इसे जनता को समझाना काफी दुष्कर काम है। लेकिन जस्टिस कुमार ने इस काम को भी आसान बना लिया। वैसे मुल्क में जहां हाल के कुछ वर्षो में पर्यावरण के बरक्स विकास को ज्यादा अहमियत दी गई हो और शहरीकरण में अंधाधुंध वृद्धि हो रही हो, वहां प्रकृति से राफ्ता रखना और जनता के साथ-साथ फैक्टरी मालिकों को भी पर्यावरण को प्राथमिकता में रखना आसान काम नहीं है। कई बार तो ऐसा भी हुआ कि एनजीटी के फैसले को नकारात्मक संदर्भ में लिया गया और लॉबिंग कर एनजीटी को पंगु बनाने के भी षडयंत्र रचे गए। लेकिन स्वतंत्र कुमार की जीजिविषा और पर्यावरण के प्रति ईमानदार होने का ही नतीजा है कि देश में बहुत कुछ बदला है। और इस क्रांतिकारी बदलाव के जनक जस्टिस कुमार ही हैं।

फोटोग्राफी...

दुनिया के सबसे खूबसूरत द्वीपों में से एक 'मॉवी आइलैंड' का परफैक्ट पैनोरमा शॉट

यह फोटो हवाई द्वीप समूह के सबसे खूबसूरत मावी आइलैंड का है, जिसे दुनिया के पांच अद्भुत द्वीपों में से एक कहा गया है। कुल 1884 वर्ग किलो मीटर क्षेत्र में फैले इस आइलैंड पर 1.4 लाख लोग रहते हैं। वर्ष 1960 के बाद से हवाई अमेरिका का सबसे पसंदीदा द्वीप समूह कहा जाने लगा था और मॉवी उसी का मुकुट बना। मॉवी के पास ही मेजिक मोलोकिनी है, जिसका आकार चंद्रमा जैसा है। 6300 वर्ष पुरानी परंपरा के अनुसार हवाई द्वीप समूह में द्वीपों का नाम बच्चों के नाम पर रखा जाता है। मावी नाम भी इस द्वीप समूह को खोजने वाले के बच्चे के नाम पर है। यह आइलैंड बड़े आकार वाली हम्पबेक व्हेल देखने के लिए मशहूर है, जो शरद ऋतु में अलास्का के बर्फीले पानी से 5 हजार किलो मीटर दूर मॉवी आ जाती हैं।reddit.com

संगठित अपराधों पर लगाम

कानून ही हमारी समस्याओं का रामबाण निदान होते तो अब तक उनमें से ढेर सारी जड़-मूल से समाप्त हो गई होतीं। लेकिन अफसोस कि न देश की सरकार को यह बात समझ में आती है और न ही ज्यादातर प्रदेश सरकारों को। वे जब भी किसी समस्या को लेकर घिरती हैं, कोई न कोई नया कानून लेकर हाजिर हो जाती हैं। यह दावा करती हुई कि इस सम्बन्धी पुराना कानून अपेक्षाकृत नरम है और उसकी नरमी समस्या से निपटने में बाधक सिद्ध हो रही है। उत्तर प्रदेश में योगी आदित्यनाथ की भाजपा सरकार द्वारा बढ़ते संगठित अपराधों पर लगाम लगाने के बहाने महाराष्ट्र के मकोका की तर्ज पर उत्तर प्रदेश कंट्रोल ऑफ ऑर्गनाइज्ड क्राइम ऐक्ट यानी यूपीकोका बनाने व लागू करने की कवायदों को भी इसी रूप में देखा जा सकता है। अभी आठ महीने पहले यह सरकार प्रदेश में खराब कानून व्यवस्था को, जिसे अखबार और न्यूज चैनल ''जंगलराज' की संज्ञा दिया करते थे, खत्म करने के वायदे पर चुनकर आई थी। इसके लिए जरूरी था कि वह अपने तंत्र को स्पष्ट संदेश देती, उसकी काहिली दूर करती और बिना राग-द्वेष के कर्तव्यनिर्वहन में सक्षम बनाती। लेकिन वह ऐसा नहीं कर पाई, जिसके लिए वह सभी वगरे की आलोचनाएं झेल रही हैं। यूपीकोका दरअसल उसका इस आलोचना से निजात पाने और मतदाताओं को यह झांसा देने का हथियार है कि वह अपराधों के उन्मूलन का अपना वायदा भूली नहीं है और सबसे पहले आतंकवाद, हवाला, फिरौती के लिए अपहरण, अवैध-खनन, अवैध भूमि कब्जों व अवैध शराब के कारोबार जैसे संगठित अपराधों और माफियाओं पर सांघातिक कानूनी प्रहार करने जा रही है। यह संदेश देने के क्रम में भी वह प्रदेश की उन पूर्ववर्ती सरकारों के सोच से आगे नहीं बढ़ पाई, प्रदेश में कानून का राज न स्थापित हो पाने के लिए जिनको जिम्मेदार ठहराती और कोसती वह थकती नहीं। जानकारों की मानें तो वह गत अगस्त महीने में ही इस निष्कर्ष पर पहुंच गई थी कि अंडर्वल्ड और राजनेताओं के बीच के नेक्सस को गैंगस्टर से भी कड़े कानून के बगैर खत्म नहीं किया जा सकता। इस बाबत गृहसचिव मणिप्रसाद मिश्र को मुंबई, दिल्ली और बिहार समेत कई राज्यों में संगठित अपराध के खिलाफ बनाए गए कानूनों का अध्ययन करने के लिए भी भेजा गया था। मायावती ने भी 2007 में ऐसे कानून लाने चाहे थे, लेकिन तात्कालीन मनमोहन सरकार ने इसकी मंजूरी नहीं दी थी। इस सरकार के रास्ते में ऐसी कोई बाधा नजर नहीं आती क्योंकि केन्द्र में भी उनकी ''अपनी ही' सरकार है और माना जा सकता है कि बिना उसकी हरी झंडी के वह इस दिशा में नहीं बढ़ी है। राजस्थान की मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे की ऐसी ही एक हिमाकत पिछले दिनों बहुत चर्चित रही, जबकि अब, जब प्रधानमंत्री अपने प्रस्तावित वित्तीय समाधान एवं जमा बीमा कानून को लेकर चिंताओं व भ्रांतियों का निवारण नहीं कर पा रहे तो योगी सरकार यूपीकोका लेकर हाजिर है। चिंतित करने वाली सबसे बड़ी बात यह है कि सरकार के खिलाफहिंसक आंदोलनों को भी इस कानून के दायरे में लाया जा रहा और दोषियों को उम्रकैद व फांसी की सजा तक का प्रावधान किया जा रहा है। सरकार के इस आश्वासन पर कतई भरोसा नहीं कि वह ऐसे दुरुपयोग रोकने के लिए खास उपाय कर रही है। वे पूछ रहे हैं कि संगठित अपराधियों व माफ्रियाओं पर अंकुश लगाने के नाम पर सारे प्रदेशवासियों को उन्हीं जैसा मानकर लाया जा रहा कानून उनके नागरिक अधिकारों को महफूज कैसे रख सकता है? आखिरकार सरकारी मशीनरी के लिए सरकार के खिलाफकिसी भी आंदोलन को हिंसक करार देकर उसे करने वालों पर यूपीकोका लगाने के आधार तैयार करना बायें हाथ के खेल से ज्यादा क्यों कर होगा?

समय से पहले नए साल का जश्न 'जी सिने अवॉर्ड्स 2018'

लाइट्स, कैमरा, एक्शन ... इसके अलावा और भी बहुत कुछ होगा इस साल की सबसे बड़ी अवॉर्ड्स नाइट ज़ी सिने अवॉर्ड्स 2018 में! इस शाम ग्लैमर और चमक-दमक का जबर्दस्त संगम देखने को मिलेगा, जिसमें बॉलीवुड की जानी-मानी हस्तियां हिंदी सिनेमा की सर्वश्रेष्ठ पेशकश का जश्न मनाने एक साथ नजर आएंगी। ब्रूक बॉन्ड रेड लेबल ज़ी सिने अवॉर्ड्स 2018 में मनोरंजन जगत के मशहूर चेहरे अपने पसंदीदा परिधानों में सजकर फोटो के लिए पोज देते नजर आए। इन सभी की आंखों में उम्मीद भी थी कि वे अपनी परफॉर्मेंस के लिए प्रतिष्ठित ज़ी सिने अवॉर्ड अपने नाम करेंगे। इस समारोह में रेड कारपेट पर नजर आने वाली हस्तियों में अमिताभ बच्चन, प्रियंका चोपड़ा, शाहरुख खान, अक्षय कुमार, रणवीर सिंह, शाहिद कपूर, भूमि पेडणेकर, कटरीना कैफ, जैकलीन फर्नांडिज, सिद्धार्थ मल्होत्रा और कई अन्य कलाकार शामिल हैं। शनिवार 30 दिसंबर 2017 को शाम 7.30 बजे ज़ी सिनेमा पर प्रसारित होने जा रहा ज़ी सिने अवॉर्ड्स 2018 इस बार समय से पहले ही नए साल का जश्न मनाएगा और इस वीकेंड मनोरंजन का धमाल और जोश से भरा माहौल जगाएगा।

कई सितारें होंगे शामिल : जहां बहुत से कलाकारों ने जबर्दस्त गानों पर कदम थिरकाए, वहीं कुछ ने अवॉर्ड ट्रॉफी अपने नाम की। बीते साल और सिनेमा की विरासत का जश्न मनाने के लिए जी सिने अवॉर्ड्स ने पूरे फिल्म जगत को एक जगह पर जमा किया। इस समारोह में शिरकत करने वाले अन्य सितारों में तापसी पन्नू, आलिया भट्ट, कार्तिक आर्यन, वरुण धवन, जैकी श्रॉफ ,राधिका आप्टे, उर्वशी रौतेला और राजकुमार राव शामिल हैं।

रोहित और सुनील होंगे होस्ट

ज़ी सिने अवॉर्ड्स 2018 के होस्ट होंगे रोहित शेट्टी और सुनील ग्रोवर, जो अपने चुटीले वन लाइनर्स से लेकर शानदार कॉमिक टाइमिंग पेश करने तक, दर्शकों को अपनी सीट से बांधे रखेंगे। ज़ी सिने अवॉर्ड्स 2018 न सिर्फ शानदार परफॉर्मेंस से भरी एक यादगार शाम होगी, बल्कि इसमें दिल छू लेने वाली स्पीच और बेहतरीन पल भी होंगे। जहां इंडस्ट्री के सबसे बड़े सितारे कदम थिरकाने वाले गानों पर जबर्दस्त प्रस्तुति देंगे, वहीं इस साल के सबसे काबिल परफॉर्मर्स जिन्होंने अपनी सिनेमाई कुशलता से भारतीय सिनेमा को नई ऊंचाइयों पर पहुंचाया, ज़ी सिने अवॉर्ड्स की ट्रॉफी अपने नाम करेंगे।

अमिताभ के साथ काम करने को लेकर उत्साहित आलिया

अभिनेत्री आलिया भट्ट महानायक अमिताभ बच्चन के साथ काम करने को लेकर उत्साहित है। अमिताभ बच्चन के अभिनय और स्टाइल की पूरी दुनिया दीवानी है। अब उनकी फैन लिस्ट में आलिया भट्ट का भी नाम शामिल हो गया है। अयान मुखर्जी की फिल्म'ब्रमास्त्र'में अमिताभ, आलिया और रणबीर कपूर एक साथ काम कर रहे हैं। हाल ही में एक अवार्ड फंक्शन में आलिया ने अमिताभ की तारीफ करते हुए कहा, 'वह यह सुनिश्चित करते हैं कि उनके आसपास के लोग उनकी स्टारडम के कारण असहज महसूस न करें। आलिया से जब पूछा गया कि क्या वह अमिताभ के साथ काम करके असहज महसूस कर रही हैं तो उन्होंने कहा, 'मैं बहुत उत्साहित हूं। हर बार जब हम मिले तो हमने यही सोचा कि हम कब एकसाथ काम करेंगे और आखिरकार वह दिन आ ही गया। अमित जी एक बहुत ही स्नेही व्यक्ति हैं। वह हर किसी को सहज महसूस कराने की कोशिश करते हैं। वह जानबूझकर किसी को भी असहज महसूस नहीं कराते, लेकिन जब आप एक दिग्गज के साथ काम कर रहे हों तो कुछ न कुछ तो होगा ही।

तापसी को अपनी जड़ों से जुड़ने का मिला मौका

तापसी पन्नू ने हाल ही में शाद अली की फिल्म 'सूरमा' का भारतीय शेड्यूल पूरा किया है। यह फिल्म भारतीय हॉकी टीम के पूर्व कप्तान संदीप सिंह की जिंदगी पर आधारित है। फिल्म में तापसी के साथ दलजीत दोसांझ और अंगद बेदी प्रमुख भूमिकाएं निभा रहे हैं। तापसी दलजीत के अपोजिट एक हॉकी प्लेयर का किरदार निभा रही हैं। वर्तमान में 'सूरमा' की शूटिंग हरियाणा के एक छोटे से गांव शाहाबाद में चल रही है। सिख परिवार से आने वाली तापसी शाहाबाद में शूटिंग करते वक्त अतीत की यादों में खो गईं क्योंकि उनके जीवन का अधिकांश समय दिल्ली और मुंबई में बीता है। अच्छी से अच्छी शिक्षा प्राप्त करने की कोशिश में तापसी का बचपन दिल्ली में गुजरा, लेकिन वह पंजाब में मौजूद अपनी जड़ों को कभी नहीं भूलीं और हमेशा उनका प्रयास रहा कि घास के मैदानों के बीच कुछ वक्त बिताया जाए और काम के तनाव से मुक्त होकर गांव के जीवन का आनंद उठाया जाए। 'सूरमा' की शूटिंग करते वक्त उन्होंने अपनी यह इच्छा भी पूरी कर ली और स्थानीय गुरुद्वारा पर मत्था टेका, स्थानीय ढाबों में खाना खाया, पारम्परिक पोशाकें पहनीं, गेहूं और गन्ने के स्थानीय खेतों की सैर की। शाहाबाद में समय बिताते हुए उन्होंने अपनी जिंदगी के एक-एक पल का आनंद उठाया, जो महानगरों में रहते हुए एक सपना बन कर रह गया था। तापसी के लिए बेहतरीन क्षण वो थे जो अपनी संस्कृति के साथ जुड़ाव बनाए रखते हुए उन्होंने गुजारे। खेतों में दौड़-दौड़ कर खेलना, ट्यूबवेल का पानी उछालना, घरों में बने खास पंजाबी पराठों का लुत्फ उठाना जैसी कई यादें इस शिड्यूल से जुड़ गई हैं।

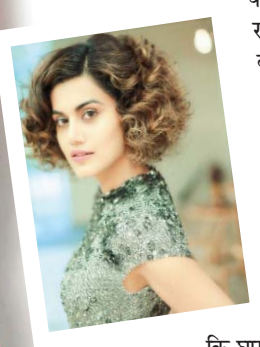

पैडमैन के लिए पहली पसंद नहीं थे अक्षय : ट्विंकल

अभिनेत्री और फिल्मकार टिंवकल खन्ना का कहना है कि आने वाली फिल्म पैडमैन के लिए अक्षय कुमार पहली पसंद नहीं थे। बॉलीवुड अभिनेता अक्षय कुमार की पत्नी टिंवकल खन्ना निर्मित फिल्म पैडमैन में अक्षय कुमार, सोनम कपूर और राधिका आप्टे की मुख्य भूमिका है। 'पैडमैन'का निर्देशन आर. बाल्की ने किया है। महिलाओं के लिए सैनिटरी नैपकिंस के महत्व को दर्शाती फिल्म'पैड मैन'अगले साल गणतंत्र दिवस पर रिलीज़ होने जा रही है। इसके लिए अक्षय कुमार पहली पसंद नहीं थे। टिंवकल खन्ना से जब पूछा गया कि क्या अक्षय कुमार ही इस भूमिका के लिए पहली पसंद थे तो टिंवकल ने इंकार किया। टिंवकल खन्ना ने कहा , 'इस फिल्म के लिए अभिनेता के तौर पर अक्षय कुमार पहली पसंद नहीं थे। मुझे फिल्म के निर्देशक आर. बाल्की ने फिल्म में अक्षय कुमार को लेने के लिए मनाया। शुरू में मैं किसी और कलाकार सोच रही थी लेकिन बाल्की ने कहा कि इस रोल के लिए अक्षय कुमार ही सबसे सही चयन होगा।' उल्लेखनीय है कि फिल्म'पैड मैन'अरुणाचलम मुरुगनाथम के जीवन पर आधारित है।

इम्तियाज संग फिर काम करेंगे शाहिद

अभिनेता शाहिद कपूर एक बार फिर निर्देशक इम्तियाज अली के साथ काम करने जा रहे हैं। शाहिद कपूर ने इम्तियाज अली के साथ सुपरहिट फिल्म'जब वी मेट'में काम किया है। शाहिद इम्तियाज अली के साथ एक बहुत ही अलग फिल्म की प्लानिंग कर रहे हैं। दस साल बाद इम्तियाज अली के साथ काम करने पर शाहिद ने कहा कि, 'हम जल्द ही कुछ करने जा रहे हैं और इसके लिए मैं बहुत उत्साहित हूं। मुझे लगता है कि इम्तियाज अद्भुत प्रतिभाशाली निर्देशक हैं। शाहिद ने कहा , 'हमने एक फिल्म बनायी थी, जब मैं अपने करियर की शुरुआत कर रहा था और वह भी अपने करियर की शुरुआत में थे। इस बारे में लोग अभी भी बात करते हैं। 'जब वी मेट'मेरे जीवन की एक विशेष फिल्म रही है। इम्तियाज ने मुझे आदित्य कश्यप जैसी भूमिका दी, मैं उनके साथ मिलकर कुछ अलग करने वाला हूं। फिल्म का विषय पिछली फिल्म से एकदम अलग होगा। इसे लेकर मैं बहुत उत्साहित हूं इसलिए'बत्ती गुल मीटर चालू'के ठीक बाद मैं उनकी फिल्म में काम करना शुरू कर दूंगा।

Readers Choice

मां ने बच्चे को जन्म देकर बनाया यह विश्व रिकॉर्ड

अमेरिका से एक ऐसी खबर सामने आ रही है जिसे पढकर हर कोई हैरान है। यहां एक महिला ने 25 साल पुराने एक भ्रुण से एक स्वस्थ शिशु को सफलतापूर्वक जन्म देकर विश्व रिकॉर्ड बना डाला। यह मानव का सबसे लंबे समय तक सुरक्षित रखा गया भ्रुण था। यूएस नेशनल इम्ब्रायो डोनेशन सेंटर की मेडिकल निदेशक जेफरी कीनन ने बताया कि पिछले महीने शिशु का जन्म हुआ, जिसका नाम एम्मा रेन गिब्सन है। इससे पहले 20 साल पुराने भ्रूण से बच्चे का जन्म कराया गया था। आपको बता दें कि जिस समय भ्रुण को फ्रीज किया गया था उस समय टीना की उम्र मात्र डेढ साल थी। पश्चिम टेनेसी की टीना गिब्सन ने फ्रोजेन भ्रुण से 25 नवंबर को 3.08 किलोग्राम वजनी बच्चे को जन्म दिया। जन्म के समय बच्चे की लंबाई 20 इंच थी। मां और बच्चा दोनों स्वस्थ हैं। टीना ने खुशी व्यक्त करते हुए कहा, मेरी उम्र भी 25 साल ही है। मैं और यह भ्रुण दोस्त हो सकते थे। मुझे बस एक बच्चा चाहिए था। मैं वर्ल्ड रिकार्ड बनने या नहीं बनने की परवाह नहीं करती हूं। टीना ने बताया कि उसकी शादी सात साल पहले हुई थी। उसके पति सिस्टिक फायब्रोसिस से पीड़ित थे। इसमें पुरुष की प्रजनन क्षमता कम हो जाती है। इस बीच टीना के पिता ने भ्रुण गोद लेकर उससे बच्चा पैदा करने की सलाह दी। फिर टीना और उसके पति ने अगस्त 2016 में भ्रूण गोद लेने के लिए आवेदन किया। कई जांच के बाद भ्रुण को टीना के गर्भाशय में प्रत्यारोपित किया गया।

बैकग्रांउड म्यूजिक के महारथी थे बसंत देसाई

अपनी मधुर संगीत लहरियों से फिल्मी दुनिया को सजाने संवारने वाले महान संगीतकार बसंत देसाई के संगीतबद्ध गीतों की रोशनी फिल्म जगत की सतरंगी दुनिया को हमेशा रोशन करती रहेगी। वर्ष 1914 में गोवा के कुदाल में जन्मे बसंत देसाई को बचपन के दिनों से ही संगीत के प्रति रूचि थी। कुछ वर्ष के बाद वह शिक्षा के लिए अपने मामा के पास महाराष्ट्र आ गये। स्कूल की पढ़ाई पूरी करने के बाद वह रंगमंच से जुड़ गये और नाटकों में अभिनय करने लगे। नाटकों से प्राप्त आय से उन्होंने एक पुराना हारमोनियम खरीद लिया और उससे शास्त्रीय संगीत का रियाज करना शुरू कर दिया। वर्ष 1929 में बसंत देसाई महराष्ट्र से कोल्हापुर आ गये। वर्ष 1930 में उन्हें प्रभात फिल्म्स की मूक फिल्म 'खूनी खंजर' में अभिनय करने का मौका मिला।

पहचान बनाने के लिए किया संघर्ष : वर्ष 1932 में बसंत देसाई को'अयोध्या का राजा'में संगीतकार गोविंद राव टेंडे के सहायक के तौर पर काम करने का मौका मिला। इन सबके साथ ही उन्हें इस फिल्म में के लिए गाने का भी मौका मिला।

पुण्यतिथि

गीत के बोल कुछ इस प्रकार के थे -'जय जय राजाधिराज' इस बीच बसंत देसाई फिल्म इंडस्ट्री में अपनी पहचान बनाने के लिए संघर्ष करते रहे।

सफलता का कीर्तिमान किया स्थापित

लगभग चार वर्ष तक बसंत देसाई मराठी नाटकों में भी संगीत देते रहे। वर्ष 1942 में आयी फिल्म 'शोभा' के जरिये बतौर संगीतकार बसंत देसाई ने अपने सिने कैरियर की शुरूआत की लेकिन फिल्म की असफलता से वह बतौर संगीतकार अपनी पहचान नहीं बना सके। वर्ष 1943 में व्ही शांताराम अपनी'शकुंतला'के लिए संगीतकार की तलाश कर रहे थे। बसंत देसाई इसके पूर्व व्ही शांताराम की'खूनी खंजर ,अयोध्या का राजा, धर्मात्मा और अमर ज्योति जैसी फिल्मों में संगीत दे चुके थे। व्ही शांताराम ने यह निश्चय किया कि इस बार फिल्म का संगीत बंसत देसाई का हो। उन्होंने बसंत देसाई को अपने पास बुलाया और अपनी फिल्म'शकुंतला' में संगीत देने की पेशकश की। इस फिल्म ने सफलता के नये कीर्तिमान स्थापित किए।

कसौटी पर खरे उतरे

इस फिल्म में बसंत देसाई को यह जिम्मेदारी दी गयी थी कि फिल्म के पात्र के निजी जिंदगी के संस्मरणों को बैकग्रांउड स्कोर के माध्यम से पेश करना। बसंत देसाई ने इस बात को एक चुनौती के रूप में लिया और सर्वश्रेष्ठ बैकग्रांउड संगीत देकर फिल्म को अमर बना दिया। इसी तरह वर्ष 1974 में जब फिल्म निर्माता गुलजार बिना किसी गानों के फिल्म 'अचानक' का निर्माण कर रहे थे तब उन्हें बसंत देसाई का ही ध्यान आया और उनसे अपनी फिल्म में बैकग्रांउड म्यूजिक देने की पेशकश की और इस बार भी बसंत देसाई कसौटी पर खरे उतरे और फिल्म के लिए श्रेष्ठ बैकग्रांउड म्यूजिक दिया । बसंत देसाई ने हिंदी फिल्मों के अलावा लगभग 20 मराठी फिल्मों के लिए भी संगीत दिया जिसमें सभी फिल्में सुपरहिट साबित हुई।

46 फिल्मों में दिया संगीत

22 दिसंबर 1975 को एचएम भी स्टूडियो से रिकार्डिंग पूरी करने के बाद वह अपने घर पहुंचे। जैसे ही उन्होंने अपने अपार्टमेंट की लिफ्ट में कदम रखा किसी तकनीकी खराबी के कारण लिफ्ट उन पर गिर पड़ी। इससे उनकी मौत हो गयी। बसंत देसाई का मानना था कि अधिक फिल्मों के लिए संगीत देने से अच्छा है अच्छा संगीत देना। बसंत देसाई ने लगभग चार दशक अपने सिने कैरियर में महज 46 फिल्मों को संगीत किया ।

छोटा पर्दा

यह भूमिका निभाने में कोई संकोच नहीं: आसिफ

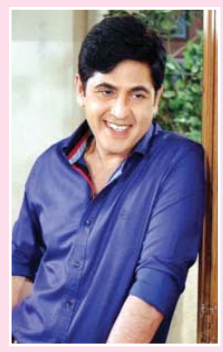

एंडटीवी के सिटकॉम 'भाबीजी घर पर है' के आगामी एपिसोड में विभूति अपनी ख्वाहिशों को पूरा करने के लिये एक साहसिक कदम उठाता हुआ नजर आता है। इस बार वह स्पर्म डोनर बनेंगे! प्यार से गोरी मेम कहलाने वाली अनीता भाबी, विभूति से अपनी ग्रुमिंग क्लास के बढ़े हुए किराये के पैसों का इंतजाम करने को कहती है। कोई चारा ना देखते हुए, वह विकी की तरह स्पर्म डोनेट करने का फैसला करता है। आसिफ शेख ने कहा, एक कलाकार होने के नाते मुझे इस तरह की भूमिका निभाने में कोई संकोच नहीं है। यह एक मजेदार सीक्वेंस है और हम सबको इसकी शूटिंग में खूब मजा आया।

'वो अपना सा' से अलग हुए प्रोड्यूसर सिद्धार्थ

ज़ी टीवी का लोकप्रिय शो 'वो अपना सा' अपनी रोचक कहानी और दिलचस्प किरदारों से दर्शकों का खूब मनोरंजन कर रहा है। हाल ही में इस शो ने 20 साल का लीप लिया है जिसमें सुदीप साहिर और दिशा परमार का पुनर्जन्म हुआ है। साथ ही निशा के महत्वपूर्ण किरदार में रिद्धी डोगरा की जगह मानसी सल्वी आ गई हैं। अब 'वो अपना सा' से जुड़ी ताजा खबर यह है कि प्रोड्यूसर सिद्धार्थ पी. मल्होत्रा ने अब इस शो से किनारा कर लिया है। ज़ी टीवी ने अब शो की कमान एल्केमी प्रोडक्शन्स के हाथों से लेकर रश्मि प्रोडक्शन्स को सौंप दी है। दीपक ने कहा, ' सिद्धार्थ पी. मल्होत्रा के साथ हमारी साझेदारी मेंदर्शकों को एक दिलचस्प शो पेश किया है।

अपने ही शो में बतौर डेब्यू करेंगे सुमित मित्तल!

सोनी एंटरटेनमेंट टेलीविजन पर प्रसारित हो रहे 'ये उन दिनों की बात है' शो को निर्विवाद रूप से सभी आयु वर्गों के दर्शकों का प्यार मिल रहा है। यह आज के सबसे ज्यादा पसंद किए जा रहे शो में से एक हैं। कहानी की स्टोरीलाइन 90 के सुनहरे दशक की पृष्ठभूमि पर आधारित है और जिनका जन्म उस दौर में हुआ था, उनके लिए तो पुरानी यादें फिर जीवित हो उठी हैं। खासकर समीर और नैना की परवान चढ़ती साधारण-सी लव स्टोरी उनके दिल के करीब है। सुमित मित्तल ने कहा, आपने सही ही सुना है। मैंने अपने ही टेलीविजन शो 'ये उन दिनों की बात है' के जरिये टीवी पर डेब्यू किया है। मैं बुजुर्ग समीर की भूमिका में नजर आउंगा ।

टाइगर की 'मुन्ना माइकल' का टीवी प्रीमियर

उनके हैरतअंगेज स्टंट्स और जोखिम भरे कारनामों के साथ-साथ उनके बेहतरीन डांस ने देश भर के लाखों लोगों को उनका दीवाना बना दिया है। जी हां, टाइगर श्रॉफ इंडिया के यूथ आइकॉन बन गए हैं। अब होम ऑफ ब्लॉकबस्टर्स ज़ी सिनेमा पर रविवार 24 दिसंबर को रात 9 बजे उनकी ताजा रिलीज फिल्म 'मुन्ना माइकल' का प्रीमियर होने जा रहा है। इस फिल्म में टाइगर श्रॉफ के अलावा नवाजुद्दीन सिद्दीकी और नवोदित अभिनेत्री निधि अग्रवाल भी महत्वपूर्ण भूमिकाओं में हैं। शब्बीर खान के निर्देशन में बनी यह फिल्म सपनों की, लगन की, रोमांस और धोखे की कहानी है।

कैटरीना कैफ ने टाइगर की उतारी नकल

'द वॉयस इंडिया किड्स' में जब सलमान खान और कैटरीना कैफ जब प्रतिभाओं को देख रहे थे, तो प्रतिभागियों ने इस अवसर का लाभ उठाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। कैटरीना कैफने लोगों की भारी मांग पर अपनी आगामी फिल्म के एक मशहूर दृश्य को परफॉर्म किया, लेकिन एक ट्विस्ट के साथ। उन्होंने जोया के बजाय टाइगर बनने का फैसला किया। हंसी-मजाक के बीच कैटरीना ने फिल्म में सलमान के मशहूर डायलॉग ''अगर तुझमे दम है तो अब मुझे रोक के दिखा'' की नकल की। सलमान खान ने जब कैटरीना के ऐक्ट पर प्रतिक्रिया दी, तो पागलपंती एक अलग मुकाम पर पहुंच गई थी।

हंसी का हंगामा लाएगी 'बरेली की बर्फी!

ब्लॉकबस्टर मूवी चैनल एंड पिक्चर्स सारे परिवार के लिए गरमा-गरम एवं ताजा मनोरंजन लेकर आया है। इस चैनल पर सोमवार 25 दिसंबर को रात 8 बजे फिल्म 'बरेली की बर्फी' का प्रीमियर होने जा रहा है। अश्विनी अय्यर तिवारी के निर्देशन में बनी खूबसूरत प्रेम कहानी 'बरेली की बर्फी' में ढेर सारी कॉमेडी, ड्रामा और प्यार है। इस फिल्म में ऐसे किरदार हैं जिनसे आप रोजमर्रा के जीवन में मिलते हैं। फिल्म में कृति सैनन, आयुष्मान खुराना और राजकुमार राव ने प्रमुख भूमिकाएं निभाई हैं। फिल्म में बेहद चुटीले संवाद हैं, जिसके चलते यह फिल्म फेस्टिव सीजन में क्रिसमस का एक परफेक्ट उपहार साबित होगी।

चुटकुले

टास्क

पति- क्या यहां-वहां घूम रही हो, मोबाइल में ब्लू वेल गेम ही खेल लो।

पत्नी- मैं बचपन से खेल रही हूं। तुमसे शादी करना मेरा लास्ट टास्क था।

बम

टीचर- अगर तुम्हें स्कूल ग्राउंड में बम मिलता है, तो क्या करोगे?

सोनू- 1-2 घंटे देखेंगे। कोई ले जाएगा तो ठीक है वरना स्टाफ रूम में रख देंगे।

मन्नत

बीवी मंदिर गई और मन्नत का धागा बांधने के लिए हाथ उठाए। इसके बाद उसने कुछ सोच कर मन्नत का धागा बांधे बिना ही अपने हाथ नीचे कर लिए।

पति- यह क्या? मन्नत नहीं मांगी?

पत्नी- मांगने ही लगी थी कि ईश्वर आपकी तमाम मुश्किलें दूर कर दे, फिर सोचा कहीं मैं ही न निपट जाऊं!

सोते-सोते

सोनू- तू सुबह जागने के बाद भी 1 घंटे तक बिस्तर पर क्यों पड़ा रहता है?

मोनू- यार, सारी रात सोते-सोते थक जाता हूं!

नकल

सोनू और मोनू (दो भाई) एक ही क्लास में पढ़ते थे।

अध्यापक- तुम दोनों ने अपने पापा का नाम अलग-अलग क्यों लिखा?

सोनू -सर फिर आप कहते कि नकल मारी है।

दिगंबर जैन मुनि बलात्कार केस में अदालत में पीड़िता का हलफनामा

पीड़िता की ओर से हलफनामा पेश करने पर आगे की सुनवाई मंगलवार को होगी

सूरत। नानपुरा टिमलियावाड स्थित दिगंबर जैन उपाश्रय में जैन मुनि द्वारा वडोदरा की एक युवती के साथ किए गए बलात्कार प्रकरण में बचाव पक्ष के वकील कल्पेश देसाई, प्रज्ञेश सारैया और विरल चलियावाला के मार्फत पेश की गई। जमानत अर्जी की सुनवाई के दौरान शोषण की शिकार हुई फरियादी की ओर से वकील मुख्तार शेख द्वारा हलफनामा पेश किया गया था। जिससे इस प्रकरण की सुनवाई आगामी मंगलवार को होगी।

विवरण के अनुसार नानपुरा टिमलियावाड में स्थित दिगंबर जैनों के उपाश्रय में वडोदरा की एक युवती के साथ जैन मुनि शांति सागरजी महाराज पर बलात्कार का आरोप लगा था। अठवा पुलिस ने मुनि के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कर उनको गिरफ्तार करके न्यायिक हिरासत में लाजपोर की जेल में भेज दिया। बचाव पक्ष के वकील द्वारा आरोपी की ओर से जमानत की अर्जी की गई थी।

शुक्रवार को शुरू हुई सुनवाई के दौरान पीड़िता और शिकायती युवती की ओर से वकील मुखातर शेख द्वारा एक हलफनामा कोर्ट में पेश किया गया। जिसमें बताया गया कि लाजपोर जेल में बंद मुनि शांति सागर को जेल में यातनाओं को भोगना पड़ रहा है। जबकि उनकी तुलना में इस समय युवती को यातना के भोग से गुजरना पड़ रहा है। जिससे मामले की अगली सुनवाई आगामी मंगलवार को की जाएगी।

विविध स्थलों पर चोरों ने किया हाथ साफ

सूरत। पूणा और सरथाणा क्षेत्र में चोरी के दो मामले हुए हैं। जिसमें चोर 2,19,500 रुपए का माल चोरी करके फरार हो गए।

पुलिस सूत्रों से प्राप्त जानकारी के अनुसार सरथाणा योगी चौक कृष्णा शॉपिंग सेंटर स्थित मेडिकल की दुकान का शटर उठाकर चोर अंदर प्रवेश किए और 24500 रुपए नकद चोरी कर ले गए। घटना के संदर्भ में दुकान मालिक दीपेश मनजीभाई धामेलिया ने सरथाणा पुलिस में रिपोर्ट दर्ज कराया है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

इसी तरह की अन्य घटना में पूणागांव कीर्तिधाम सोसायटी के घर नं. 64 में चोर प्रवेश करके 43 हजार रुपए नकद और सोने-चांदी के जेवर सहित कुल 1.95 लाख रुपए का माल चोरी करके फरार हो गए। घर के मालिक लाला हादाभाई आहिर ने पूणा पुलिस थाने में रिपोर्ट दर्ज कराया है।

मेंटल अस्पताल मरोली में नि:शुल्क मेडिकल कैम्प, सैंकड़ों को बांटे किट

सूरत। उत्कर्ष मंडल नवसारी दो वर्ष से समाज सेवा करने वाली संस्था साकार हुई है। वस्त्रदान सेतु योजना के तहत आज दिन तक शहर तथा आसपास के गांवों से पुराने वस्त्र एकत्र करके जरूरतमंद लोगों को वितरित किया जाता है। वर्षा ऋतु में बाढ़ के समय बनासकांठा में काफी तवाही हुई थी। ऐसे समय में उत्कर्ष मंडल के कार्यकर्ता पाटण क्षेत्र की प्राथमिक पाठशाला में पढ़ने वाले 450 से अधिक बालकों को शैक्षणिक किट दयिा गया और शर्दी के मौसम को ध्यान में रखते हुए पाठशाला के बालकों के लिए हाल में ही स्वेटर भेजा गया है। समाज सेवा की प्रवृत्ति के फलस्वरूप उत्कर्ष मंडल नवसारी ने यहां के एसबी गार्डा कॉलेज और पीके पटेल कॉमर्स कॉलेज नवसारी के एनएसएस युनिट के सहयोग से मेंटल अस्पताल मरोली में मेगा मेडिकल कैंप का नि:शुल्क आयोजन किया।

जिसमें रोटरी आई अस्पताल तथा कान, नाक, गला के लिए डॉ. प्रयत्नकुमार, चर्म रोग के लिए डॉ. चेतन कॉकडिया, डॉ. गौरांग गोपाणी, स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. रोनलि पटेल सहित अन्य डॉक्टर व महानुभावों के सहयोग से कैंप को बड़ी सफलता मिली।

सूरत मनपा आयोजित गोपी कला उत्सव 2017 का शुभारंभ 26 से

सूरत। शहर मनपा द्वारा गोपी कला उत्सव 2017 के अंतर्गत कला और संस्कृति को उजागर करने वाले विविध सांस्कृतिक कार्यक्रमों का शुभारंभ 26 दिसंबर से होकर 31 दिसंबर तक संपन्न होंगे। हर रोज शाम 7.30 बजे 10 बजे तक नव पल्लवित गोपी तालाब में कार्यक्रम किए जाएंगे। इस उत्सव का मूल उद्देश्य बालकों, कलाकारों को प्रोत्साहन तथा नगर के लोगों को मनोरंजन मिले। इस आशय से सूरत पालिका ने उत्सव का आयोजन किया है।

26 दिसंबर को गुजराती गीत, 27 को ताल ग्रुप की कृतिका शाह दिग्दर्शित फोक-आर्ट कार्यक्रम, 28 को शहर की कला संस्थाओं का सांस्कृतिक कार्यक्रम, 29 को दिव्यांग बालकों द्वार आर्केट्रा, 30 को द तापी प्रोजेक्ट संगीत व अन्य कार्यक्रम तथा 31 दिसंबर को डायरो का कार्यक्रम होगा। इन कार्यक्रम में भाग लेने के लिए शहर की जनता से महानगर पालिका द्वारा अपील की गई है।

उधना उद्योगनगर में शराब से भरी कार बरामद

2.74 लाख की शराब के साथ कार का ड्राइवर गिरफ्तार

सूरत। उधना पुलिस ने उद्योगनगर विस्तार से 2.74 लाख की शराब से भरी कार को जब्त करके कार चालक को गिरफ़ार की है।

जबकि दो अन्य को वांटेड घोषित कर कानूनी कार्रवाई शुरू की है। उधना पुलिस ने मिली गोपनीय सूचना के आधार पर उधना रोड नं. 6 महेन्द्र शोरूम के सामने गश्त लगा रखी थी।

उसी समय वहां आई स्कोर्पियो कार को रोककर उसकी तलाशी लेने पर उसमें से 2.74 लाख रुपए की शराब मिली। पुलिस ने कार और शराब को जब्त कर कार चालक अमृतलाल परमानंद (रॉयल पैलेस, नवसारी देशेर बाजार) को गिरफ्तार कर लिया।

जबकि आरोपी आजाद और कालू नामक दो व्यक्ति को वांटेड घोषित कर उनके खिलाफ कानूनी कार्रवाई शुरू की है।

सूरत जिला वकील मंडल के प्रमुख बने किरीट पानवाला, कमलेश खुंट सेक्रेटरी

सूरत। सूरत जिला वकील मंडल-2018 वर्ष के लिए प्रमुख, उपप्रमुख, खजांजी तथा सेक्रेटरी पद के लिए 22 दिसम्बर को मतदान आयोजित किया गया। जिसमे मतदाता सूची में नामांकित 2344 वकील मतदाताओं में से 1869 लोगों ने मतदान किया। सूरत जिला वकील मंडल के मुख्य चुनाव अधिकारी धर्मेश पटेल द्वारा प्राप्त जानकारी के अनुसार शुक्रवार को जिला वकील मंडल के प्रमुख, उपप्रमुख, खजांची तथा सेक्रेटरी (सचिव) पद के लिए मतदान आयोजित किया गया। इस चुनाव में प्रमुख पद के लिए मनीष आर. दूधवाला, किरीट पानवाला तथा ब्रिजेश पी.पटेल मैदान में उतरे थे। तीनो प्रत्याशियों में दूधवाला को 129, ब्रिजेश पटेल को 751 और किरीट पानवाला को 982 मत मिले। इस प्रकार किरीट पानवाला 982 मत हासिल कर 231 मतों से विजयी घोषित हुए। जबकि 1113 मत हासिल कर भरत सिंह एन. चावड़ा उपप्रमुख, 1014 मत प्राप्त कर कमलेश डी. खुंट सेक्रेटरी, अनिल डी. जाधव 903 मत हासिल कर ज्वॉइन्ट सेक्रेटरी और उमेश ए. पाटील 1382 मत हासिल कर खजांची बने।

एक शाम तारातरा धाम के नाम

स्वतंत्र राजस्थान संवाददाता, सूरत। सोने की मूरत कहे जाने वाले शहर सूरत में एक शाम तारातरा धाम के नाम विशाल धर्म सभा का आयोजन किया गया है। जिसमे पधारने वाले महापुरुष श्री श्री 1008 श्री परम पूज्यनीय महंत श्री प्रतापपुरी जी महाराज मठाधीश तारातरा धाम बाड़मेर तथा तपोनिधि बाल तपस्वी श्री कृष्ण भक्त मामाजी उपासक परम पूज्यनीय भक्तराज दाता श्री महेन्द्र सिंह जी राणावत गादीपति मामाजी धाम गुडा मांगलियान के पावन सानिध्य में कार्यक्रम का आयोजन होगा।

आयोजन कमेटी के व्यवस्थापक शैलेश जी सोनी ने बताया कि सूरत नगरी में पहली बार ऐसे महापुरुषों का समागम होगा और उनका पावन सानिध्य हमे मिल रहा है। हम बहुत भाग्यशाली हैं कि ऐसे महापुरुषों के श्रीमुख से हमे आशिर्वचन सुनने का मौका मिलेगा। इस कार्यक्रम की तैयारियां पूर्ण हो चुकी है। अत: आप सभी महानुभावों को आमंत्रित किया जाता है कि आप अपने सपरिवार इस विशाल सर्व धर्म सभा में पधारकर इस आयोजन की शोभा बढ़ावें अऔर संतो का आशिर्वाद प्राप्त करें।

इंजीनियरिंग कार्य हेतु ब्लॉक लिए जाने से आज और कल कई ट्रेनें प्रभावित रहेंगी

अहमदाबाद। अहमदाबाद मंडल पर अहमदाबाद-पालनपुर खंड के बीच इंजीनियरींग कार्य हेतु पांच घंटे का ब्लॉक लिए जाने के कारण 22 और 23 दिसंबर को कई ट्रेनें रद्द, आंशिक रूप से रद्द और कुछ ट्रेनों को मार्ग परिवर्तित किया गया है।

ट्रेन संख्या 79437 मेहसाणा-आबूरोड और ट्रेन संख्या 794378 आबूरोड-मेहसाणा, ट्रेन संख्या 19411 अहमदाबाद-अजमेर और ट्रेन संख्या 19412 अजमेर-अहमदाबाद, ट्रेन संख्या 14803 भगत की कोठी-अहमदाबाद और ट्रेन संख्या 14804 अहमदाबाद-भगत की कोठी 22 और 23 दिसंबर को पूर्ण रूप से रद्द रहेगी। जबकि ट्रेन संख्या 54803 जोधपुर-अहमदाबाद, ट्रेन संख्या 54804 जोधपुर-अहमदाबाद और ट्रेन संख्या 54804 अहमदाबाद-जोधपुर, ट्रेन संख्या 54805 अहमदाबाद-जयपुर और ट्रेन संख्या 54806 जयपुर-अहमदाबाद 22 व 23 दिसंबर को आंशिक रूप से रद्द रहेंगी। 20 दिसंबर को बेंगलूर से चलनेवाली ट्रेन संख्या 16508 बेंगलोर-भगत की कोठी 22 दिसंबर को वडोदरा से परिवर्तित मार्ग वाया वडोदरा-रतलाम होकर चलाई जाएगी और ट्रेन संख्या जयपुर-बांद्रा टर्मिनस को 22 व 23 दिसंबर को वाया रतलाम-वडोदरा होकर चलेगी।

जबकि 23 दिसंबर को ट्रेन संख्या 12959 दादर-भुज वाया अहमदाबाद-विरमगाम-ध्रांगध्रा-सामखियाली होकर चलेगी। इसके अलावा 22 दिसंबर की 8 ट्रेनें और 23 दिसंबर की 3 ट्रेनों को रेग्युलेट किया गया है। जिसमें 22 दिसंबर को ट्रेन संख्या 19031 अहमदाबाद-हरिद्वार, ट्रेन संख्या 19223 अहमदाबाद-जम्मूतवी और ट्रेन संख्या 19409 अहमदाबाद-भगत की कोठी को 22 दिसंबर को 1.15 घंटे, ट्रेन संख्या 14806, ट्रेन संख्या 12547 आग्रा फोर्ट-अहमदाबाद, ट्रेन संख्या 16209 अजमेर-मैसूर और ट्रेन संख्या 19224 जम्मूतवी-अहमदाबाद को 22 दिसंबर को 2 घंटे तथा ट्रेन संख्या 19032 हरिद्वार-अहमदाबाद को 22 दिसंबर को 1 घंटे रेग्युलेट किया जाएगा। इसी प्रकार ट्रेन संख्या 19031 अहमदाबाद-हरिद्वार, ट्रेन संख्या 19223

ईवीएम को लेकर दो धड़ों में बंटी कांग्रेस, जीतने वालों के लिए अच्छी व्यवस्था

अहमदाबाद (ईएमएस)। ईवीएम की सच्चाई को लेकर कांग्रेस नेता दो गुटों में बंट गए हैं। जीतने वाले कांग्रेस के उम्मीदवार ईवीएम को सही ठहरा रहे हैं, वहीं हारने वाले इसे गलत बता रहे हैं। गुजरात विधानसभा चुनाव में हार के बाद कांग्रेस नेता मेहसाणा के एक रिसोर्ट में अपनी हार पर मंथन कर रहे हैं।

कांग्रेस के गुजरात प्रभारी अशोक गहलोत की अध्यक्षता कल से प्रारंभ हुई तीन दिवसीय चिंतन शिबिर के दूसरे दिन राज्य के 14 जिलों की समीक्षा की गई। दूसरे दिन भी कांग्रेस हार का कारण ईवीएम को बताया। ईवीएम को लेकर कांग्रेस दो धड़ों में बंट गई है। एक गुट नतीजों के लिए ईवीएम को दोषी ठहरा रहा है तो दूसरा गुट उम्मीदवार पर ठीकरा फोड़ रहा है। चुनाव में पराजित उम्मीदवारों में ईवीएम पर ठीकरा फोड़ा है तो विजेता प्रत्याशी के मुताबिक ईवीएम में कोई गड़बड़ी नहीं हुई। कांग्रेस के दिग्गजों की हार को लेकर संगठन ने पेशकश की है। पोरबंदर में अर्जुन मोढवाडिया की हार के लिए बसपा और नोटा को जिम्मेदार ठहराया गया है। बसपा और नोटा के कुल 5000 से ज्यादा वोट थे, जिसकी वजह से अर्जुन मोढवाडिया को लीड नहीं मिली। वहीं मांडवी और महुवा में स्थानीय नेताओं की निष्क्रियता कांग्रेस को नुकसान कर गई। मांडवी में शक्तिसिंह को उम्मीदवार बनाए जाने से स्थानीय नेता निष्क्रिय हो गए थे। ऐसे नेताओं के खिलाफ कार्यवाही करने की कार्यकर्ताओं ने पार्टी नेतृत्व से पेशकश की है। वहीं महुवा में भी तुषार चौधरी को स्थानीय नेताओं की निष्क्रियता ने नुकसान पहुंचाया। मेहसाणा में जारी कांग्रेस की चिंतन शिबिर के दूसरे दिन मोरबी, सुरेन्द्रनगर, भावनगर, राजकोट, सूरत, तापी, जामनगर, कच्छ, नर्मदा, पोरबंदर, देवभूमि द्वारका, सोमनाथ, बोटाद और जूनागढ़ समेत 14 जिलों की समीक्षा की गई। इन सभी जिलों में कांग्रेस की हार पर चिंतन किया गया। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष भरतसिंह सोलंकी ने मीडिया से बातचीत में कहा कि कई उम्मीदवारों से ईवीएम को लेकर शिकायत मिली है, जिसे लेकर पार्टी टेनिकल एक्सपर्ट और कानून के जानकार से चर्चा की है। इस संदर्भ में कांग्रेस का लीगल डिपार्टमेंट और वकील साथ मिलकर कोई फैसला करेंगे।

अहमदाबाद चुनाव के बाद राहुल गांधी का पहला गुजरात दौरा आज

अहमदाबाद (ईएमएस)। गुजरात विधानसभा चुनाव के नतीजे आने के बाद कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी आज गुजरात आएंगे। गुजरात चुनाव में कांग्रेस की भले ही हार हुई हो, परंतु 22 साल बाद वह मजबूत विपक्ष के तौर पर उभरी है और लंबे समय के बाद पहली गुजरात में 70 से ज्यादा सीटें जीतने में सफल रही है। जिसका श्रेय गुजरात में राहुल गांधी के प्रचार का तरीका और उनकी बढ़ती लोकप्रियता को जाता है। 23 दिसंबर को गुजरात आ रहे राहुल गांधी उत्तरी गुजरात के मेहसाणा में चल रही कांग्रेस की चिंतन शिबिर में शामिल होंगे। जहां सुबह 11.30 बजे उत्तरी गुजरात के नेताओं से, 12.20 मध्य गुजरात के, 2.00 बजे कच्छ और सौराष्ट्र, 3.00 दक्षिणगुजरात के और 4.00 बजे कांग्रेस कार्यकर्ताओं से मुलाकात करने के बाद राहुल गांधी दिल्ली के रवाना हो जाएंगे।

गौरतलब है गुजरात चुनाव में हार पर कांग्रेस के मेहसाणा के एक रिसोर्ट में चिंतन कर रही है। तीन दिवसीय चिंतन शिबिर के अंतिम दिन कांग्रेस के नए अध्यक्ष राहुल गांधी पार्टी नेताओं और कार्यकर्ताओं को के साथ हार पर पर चर्चा करेंगे। गुजरात चुनाव हारने के बावजूद राहुल गांधी ने गुजरात की जनता को अभूतपूर्व समर्थन देने के लिए आभार व्यक्त किया था और साथ ही कहा था कि गुजरात की जनता उन्हें बहुत कुछ सिखाया है और काफी प्यार दिया है।

गुजरात में 77 सीट मिलने का श्रेय राहुल गांधी को जाता है

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक व प्रकाशक सुरेश मौर्या द्वारा तासीलोक पब्लिकेशन 152,153 श्री राम इंडस्ट्रीयल एरिया पांडेसरा सूरत 394210 से मुद्रत, एवं 4 ओ-ब्लाक आगम नवकार कॉम्पलेक्ष सचीन रेल्वे स्टेश के पास, सूरत, जि. सूरत, गुजरात से प्रकाशित, **संपादक :- सुरेश मौर्या** फोन नं. (9879141480) **Tc.No. : GUJHIN00722**, E-mail: krantisamay@gmail.com